गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। AND ANDR।

उत्तर प्रदेश और ओ. आर. एस. का राज्य।

20 जनवरी, 2005

[आर. सी. लाहोटी, सीजे। , रूमा पाल, अरुण कुमार, जी. पी. माथुर और सी. के. ठाकर, जे. जे.]

भारत का संविधानः

अनुसूची VII सूची II प्रविष्टि 62-वस्तुओं पर विलासिता कर का दायरा

या के तहत लेख-आयोजित, "विलासिता" पर विचार नहीं किया गया-का अर्थ चर्चा की गई-विवादित कानूनों में से कोई भी किसी भी गतिविधि पर कर लगाने का प्रयास नहीं करता है, लेकिन विलासिता वस्तुओं के रूप में वर्णित वस्तुओं पर कर लगाने का प्रयास करता है-इसलिए कानून विधायी रूप से लागू होते हैं।

अक्षम-यू. पी. विलासिता पर कर अधिनियम, 1995-ए. पी. विलासिता पर कर अधिनियम, 1987-पश्चिम बंगाल विलासिता पर कर अधिनियम, 1994। अनुसूची VII सूची I प्रविष्टियाँ 83 और 84, सूची II प्रविष्टियाँ 54 और 62 और कला। 286 & 366 (29 - (क) विलासिता की वस्तुओं/वस्तुओं पर कर लगाने का स्वीकार्य तरीका-विलासिता की वस्तुओं पर कर लगाने का तरीका हमेशा उनके अधीन रहा है -

उत्पाद शुल्क, बिक्री कर, सीमा शुल्क की राजकोषीय व्यवस्था को सूची-2 प्रविष्टि 62 के तहत नहीं, बल्कि भारी दरों पर लागू करना-सूची-1 की प्रविष्टि 83 और 84 में उन वस्तुओं की प्रकृति के बारे में कोई अंतर नहीं किया गया है जो बिक्री, उत्पाद शुल्क या आयात की विषय वस्तु हो सकती हैं, चाहे वे आवश्यकता की वस्तुएं हों या विलासिता की वस्तुएं।

Art.265 और अनुसूची VII-कराधान प्रविष्टियाँ कर का विषय-विशेषताएँ

किसी वस्तु/वस्तु का, उस वस्तु/वस्तु का उल्लेख किए बिना, जिसे कर-कराधान का विषय नहीं माना जाता है।

अनुसूची VII सूची II प्रविष्टियाँ 62,54 और सूची I प्रविष्टि 92-ए और कला। 286,366 (29 - ए)-सूची II प्रविष्टियों की शक्ति और सापेक्ष दायरा 62 और 54 वस्तुओं/वस्तुओं के हस्तांतरण, आपूर्ति या वितरण पर विलासिता कर का अधिरोपण, बिक्री कर लगाने की राज्यों की शक्ति पर संवैधानिक सीमाएं-राज्यों की बिक्री कर लगाने की शक्ति पर सभी संवैधानिक प्रतिबंध

Art.286 (3) (ए) आर/डब्ल्यू Ss.14,15 सी. एस. टी. अधिनियम, 1956 और धारा 3 और अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (विशेष महत्व की वस्तुएं) अधिनियम, 1957 के प्रावधान को दरकिनार नहीं किया जा सकता है, जिससे राज्यों को वस्तुओं की आपूर्ति पर विलासिता के रूप में वर्णित करके कर लगाने की अनुमति मिलती है।

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। » . यू. पी. राज्य

वस्तु-विलासिता की आपूर्ति वस्तुओं की आपूर्ति के अलावा और कुछ नहीं है, क्योंकि वस्तु स्वयं विलासिता का गठन करती है, भले ही तंबाकू विलासिता की वस्तु हो, लेकिन इसकी आपूर्ति पर कर सूची II प्रविष्टि के तहत राज्यों की अनन्य क्षमता के भीतर है।

54 आर/डब्ल्यू Art.366 (29-ए) (ए), लेकिन संवैधानिक न्यायालयों के अधीन-विवादित यूपी और एपी अधिनियमों ने राज्यों को बिक्री कर-यू. पी. लगाने की शक्ति से बाहर रखा। विलासिता पर कर अधिनियम, 1995-ए. पी. विलासिता पर कर अधिनियम, 1987।

अनुसूची VII सूची II प्रविष्टि 62 और सूची 1 प्रविष्टि 83 और 84 आर/डब्ल्यू। एस. 3 एडीई

अधिनियम, 1957-धारा 3 ए. डी. ई. अधिनियम, 1957 के अंतर्गत आने वाली वस्तुओं पर राज्यों द्वारा विलासिता कर लगाने का सापेक्ष दायरा-अभिनिर्धारित, अनुज्ञेय-विलासिता अधिनियम, 1994 पर पश्चिम बंगाल कर को अमान्य ठहराया गया।

कलाएँ। 265,246 और अनुसूची VII-केंद्र और केंद्र के बीच शक्तियों का विभाजन

राज्य-अनुसूची VII में कर प्रविष्टियों की व्याख्या के लिए सिद्धांतों की प्रकृति-आयोजित, पारस्परिक विशिष्टता Art.246 में परिलक्षित होती है-इस प्रकार, कर प्रविष्टियों को स्पष्टता और सटीकता के साथ समझा जाना चाहिए-एक कर प्रविष्टि जो अतिव्यापी हो सकती है-एक कर के तत्व-कर का विषय और कर की घटना-इस तरह के अंतर का संवैधानिक महत्व-चर्चा-कला। 265 , 246,248 (2) & अनुसूची VII और अनुसूची VII सूची 1 प्रविष्टि 97 में कराधान प्रविष्टियाँ-अनुसूची VII में सूचियों में प्रविष्टियों के तहत कराधान की शक्ति-चर्चा की गई।

संविधान की व्याख्या-एक समाज-का अनुप्रयोग

सिद्धांत-सावधानी बरतनी चाहिए-चर्चा की गई।

विलासिता करः

यू. पी. विलासिता पर कर अधिनियम 1995-ए. पी. विलासिता पर कर अधिनियम, 1987-पश्चिम

विलासिता पर बंगाल कर अधिनियम, 1994-की संवैधानिक वैधता

शब्द और वाक्यांशः

" विलासिता "-का अर्थ

संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि 62 संबंधित है।

के संबंध में कानून बनाने के लिए राज्य विधानमंडलों की अनन्य शक्ति " विलासिता पर कर, जिसमें मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ पर कर शामिल हैं। कई राज्यों ने कानून बनाए हैं जिनके बारे

में उनका दावा है कि वे इस प्रविष्टि के तहत विलासिता पर कर लगाने के अधिकार के लिए संदर्भित हैं। ये अपीलें और रिट याचिकाएं उत्तर प्रदेश कर विलासिता अधिनियम, 1955, आंध्र प्रदेश कर विलासिता अधिनियम, 1987 और पश्चिम बंगाल कर विलासिता अधिनियम, 1994 से संबंधित हैं। इन कानूनों की विधायी क्षमता 734

निर्धारिती द्वारा विभिन्न मंचों के समक्ष चुनौती दी गई थी-कुछ मामलों में आंशिक रूप से सफलतापूर्वक, और अन्य में सफलता के बिना। जिस हद तक

निर्धारिती असफल रहे, उन्होंने निर्णयों को चुनौती दी है; उन मामलों में जिनमें निर्धारिती सफल रहे, संबंधित राज्य ने अपील दायर की है।

राज्यों ने इस शब्द की अपनी व्याख्या में अंतर किया है

" प्रविष्टि 62 सूची II की विलासिताएँ क्योंकि उन्होंने संदर्भ में तर्क दिया है और

विशेष कानून के दृष्टिकोण से विधायी रूप से सक्षम के रूप में बचाव करने की मांग की गई। यद्यपि इन मामलों में हल किया जाने वाला प्रमुख प्रश्न सूची-II की प्रविष्टि 62 का दायरा है, लेकिन उत्तर द्वारा अधिनियमित विलासिता कर पर तीन कानूनों द्वारा लगाए जाने वाले कर की प्रकृति क्या है।

प्रदेश, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल को दृढ़ संकल्प की आवश्यकता थी।

मामलों का निपटारा करते हुए, न्यायालय ने पकड़नाः 1. प्रविष्टि 62 की भाषा और विधायी इतिहास को देखते हुए,

सूची II की प्रविष्टि 62 वस्तुओं या वस्तुओं पर कर लगाने की अनुमति नहीं देती है। प्रविष्टि में "विलासिता" शब्द भोग की गतिविधियों को संदर्भित करता है,

आनंद या आनंद। जहाँ तक विवादित कानूनों में से कोई भी किसी भी गतिविधि पर कर लगाने का प्रयास नहीं करता है और निश्चित रूप से विलासिता वस्तुओं के रूप में वर्णित वस्तुओं पर कर लगाने का प्रयास करता है, उन्हें विधायी रूप से अक्षम होना चाहिए और घोषित किया जाना चाहिए। हालांकि सोमैया ऑर्गेनिक्स (इंडिया) लिमिटेड में सिद्धांतों का पालन करते हुए विवादित अधिनियमों को निरस्त करने के लिए विवादित अधिनियमों के तहत पहले से भुगतान किए गए करों के किसी भी रिफंड की अनुमति देना उचित है। निर्धारिती द्वारा दी गई किसी भी बैंक गारंटी का भुगतान कर दिया जाएगा। [779 - एफ-जी]

सोमैया ऑर्गेनिक्स (इंडिया) लिमिटेड बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, [2001] 5 एस. सी. सी. 519,

पीछा किया।

2. विलासिता पर कर से संबंधित पहले के मामले इस आधार पर आगे बढ़े

सूची II की प्रविष्टि 62 में विलासिता की वस्तुओं को शामिल किया गया था। इससे पहले के फैसलों में, इस न्यायालय से इस सवाल का जवाब देने के लिए नहीं कहा गया था कि क्या प्रविष्टि 62 में विलासिता की वस्तुओं को शामिल नहीं किया गया था और यह केवल उन चीज़ों तक ही सीमित होना चाहिए जैसे कि आनंद या भोग जो या तो विकल्प है या नहीं।

महंगा पड़ता है। 1761 - सी]

A.B.Abdul कादिर v. भारत संघ, [1962] 2 एससीआर 741; फेडरेशन ऑफ इंडिया

होटल और रेस्तरां वी। भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 634 और एक्सप्रेस होटल्स बनाम। गुजरात राज्य, [1989] 3 एस. सी. सी. 677, संदर्भित।

3. सैद्धांतिक रूप से 'विलासिता' कई में से प्रत्येक को शामिल करने में सक्षम है।

शब्द से संबंधित अर्थ। सवाल यह है कि शब्द कैसा होना चाहिए।

संवैधानिक प्रविष्टि में निहित। न तो शब्दकोश का अर्थ और न ही शब्द से जुड़ा अर्थ अस्पष्टता को न्यायिक रूप से हल करता है। समाधान प्रविष्टि की भाषा में पाया जाना चाहिए

अधिरोपण के संबंध में संवैधानिक योजना पर विचार करना करों और राजस्व का संग्रह। [761 - एफ-जी]

कॉर्पस ज्यूरिस सेकंडम खंड-IV पी। 887 और ब्लैक लॉ डिक्शनरी, (छठा)

संस्करण), संदर्भित।

4.1 . अन्य के संविधानों के बीच जो भी समानताएँ हों

संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा या ऑस्ट्रेलिया जैसे इस देश के समान संघीय संरचना वाले देशों में, इस न्यायालय ने एक सामान्य नियम के रूप में यह निर्णय दिया है कि उन देशों के न्यायालयों द्वारा व्यक्त की गई राय हमारे संविधान में विधायी प्रमुखों के आवंटन को समझने में सहायक नहीं हो सकती है,

हालाँकि वे वास्तविक चरित्र को निर्धारित करने में कुछ प्रासंगिक हो सकते हैं।

विशेष कानून। [761 - एच; 762-ए-बी]

छोटाभाई जेठाभाई पटेल बनाम। भारत संघ, [1962] सप। 2 एससीआर

1 ; बॉम्बे राज्य बनाम। चमारबागवाला, [1957] एस. सी. आर. 874; अतिबाड़ी टी कंपनी. वी. असम राज्य, [1961] 1 एस. सी. आर. 809 और द ऑटोमोबाइल ट्रांसपोर्ट (राजस्थान) v. राजस्थान राज्य, [1963] 1 एस. सी. आर. 491, पर निर्भर था।

सुब्रमण्यन चेट्टियार बनाम। मुथुस्वामी गौंडर (1940) एफ. सी. आर. 188 और

भारत संघ बनाम। एच. एस. ढिल्लन, [1971] 1 एस. सी. सी. 779,801-803, संदर्भित।

5. भारतीय संविधान इस मायने में अद्वितीय है कि इसमें एक विस्तृत विवरण शामिल है।

केंद्र और राज्यों के बीच कराधान की विधायी शक्तियों की गणना और विभाजन। कराधान प्रविष्टियों को स्पष्टता के साथ समझा जाना चाहिए और

इस तरह की विशिष्टता को बनाए रखने के लिए सटीकता, और एक कराधान प्रविष्टि का निर्माण जो अतिव्यापी हो सकता है, को त्याग दिया जाना चाहिए। यदि कर लगाने की शक्ति किसी विशेष विधायी क्षेत्र के भीतर है तो विधायी सूचियों के अन्य क्षेत्रों को इस क्षेत्र को बाहर करने के लिए समझा जाना चाहिए ताकि

विधायी अतिक्रमण की कोई संभावना न हो। शास्त्रीय रूप से, एक कर-को दो तत्वों से बना माना जाता हैः वह व्यक्ति, वस्तु या गतिविधि जिस पर कर लगाया जाता है और कर की घटना। इस प्रकार प्रत्येक कर किसी उद्देश्य या कराधान की घटना पर लगाया जा सकता है। दोनों के बीच का अंतर अंततः भारतीय संविधान के संदर्भ में महत्वपूर्ण नहीं हो सकता है। ये दोनों तत्व कराधान की घटनाओं से अलग हैं।

कर अधिरोपित करना उस घटना या तरीके को भी निर्धारित कर सकता है जिसमें कर का बोझ किसी भी व्यक्ति पर पड़ेगा और अपने भीतर कर की राशि और माप लेगा। इस भेद का महत्व इस तथ्य में निहित है कि भारत में पहले दो को संवैधानिक दर्जा दिया गया है, जबकि कर की घटना वैधानिक विवरण का मामला होगा। द.

कर की घटना यह समझने में प्रासंगिक होगी कि कर प्रत्यक्ष है या अप्रत्यक्ष। लेकिन कर की विषय वस्तु को निर्धारित करने में यह अप्रासंगिक होगा। [762 - डी; 763-सी-एफ।

होक्स्ट फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड और ए. एन. आर. वी. बिहार राज्य और अन्य। , [1983] 3 एस. सी. आर. 130; पश्चिम बंगाल राज्य बनाम केसोरम इंडस्ट्रीज लिमिटेड और अन्य। ,

जे. टी. 2004 (1) 375; एम/एस। छोटाभाई जेठाभाई पटेल एंड कंपनी बनाम भारत संघ और एएनआर। , [1962] 2 पूरक। एस. सी. आर 1: आकाशवाणी (1962) एससी 1006 और कर्नाटक राज्य बनाम। ड्राइव-इन-एंटरप्राइजेज, [2001] 4 एस. सी. सी. 60, पर निर्भर था।

एच. एम. सीरवई का भारत का संवैधानिक कानून, चौथा संस्करण, खंड

1 पृष्ठ 166 अनुच्छेद 1 ए 25 का उल्लेख किया गया है।

6.1 . भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची की तीन सूचियों के तहत

एक वस्तु या एक घटना या दोनों के संबंध में हो सकता है। अनुच्छेद 246 यह स्पष्ट करता है कि संसद या राज्यों को किसी विशेष मामले पर कानून बनाने के लिए प्रदत्त अनन्य शक्तियों में उस मामले के संबंध में कानून बनाने की शक्ति शामिल है। इसलिए जहां प्रविष्टि कर के किसी उद्देश्य का वर्णन करती है, उस उद्देश्य से संबंधित सभी कर योग्य घटनाएँ कानून के उस क्षेत्र के भीतर हैं जब तक कि घटना विशेष रूप से किसी अन्य उद्देश्य के तहत कहीं और प्रदान नहीं की जाती है। विधायी प्रमुख। जहां विधायी ओवरलैप की संभावना है, अदालतों ने विधायी सूचियों में प्रविष्टियों के निर्माण के तय किए गए सिद्धांतों के अनुसार मुद्दे का समाधान किया है। इस तरह के तय किए गए सिद्धांतों में से पहला यह है कि विधायी प्रविष्टियों की उदारता से व्याख्या की जानी चाहिए; सूची में किसी भी वस्तु को संकीर्ण या प्रतिबंधित अर्थ में नहीं पढ़ा जाना चाहिए और प्रत्येक सामान्य शब्द को सहायक या सहायक मामलों तक विस्तारित किया जाना चाहिए जिन्हें इसमें निष्पक्ष और यथोचित रूप से समझा जा सकता है। [764 - बी-ई]

संयुक्त प्रांत बनाम। माउंट। अतीका बेगम, ए. आई. आर. (1941) एफ. सी. 16; वेस्टर्न इंडिया थिएटर्स लिमिटेड बनाम। छावनी बोर्ड पूना, [1959] पूरक। 2 एस. सी. आर. 63,69; ई. एल. ई. एल. होटल्स एंड इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड और अन्य। वी. भारत संघ, [1989। 3 एस. सी. सी. 698; एक्सप्रेस होटल्स बनाम। गुजरात राज्य, [1989] 3 एस. सी. सी. 677 और बॉम्बे राज्य बनाम। आर. एम. डी. चमरबागवाला, (1957) एस. सी. 874, पर भरोसा किया।

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य

बॉम्बे राज्य बनाम। आरएमडी चमरबागवाला, आकाशवाणी (1956) Bom.1,

संदर्भित किया गया।

6.2 . दूसरा सिद्धांत यह है कि प्रतिस्पर्धी प्रविष्टियों को पढ़ा जाना चाहिए।

सामंजस्यपूर्ण रूप से। संघर्ष से बचने का उचित तरीका यह होगा कि प्रविष्टियों को एक साथ करना और एक की भाषा की दूसरे से व्याख्या करना।

[765 - एफ]

परिषद में गवर्नर जनरल v. मद्रास प्रांत, (1945) एफ. सी. आर. 17;

बॉम्बे राज्य बनाम। नरोत्तमदास जेठाभाई, [1951] 2 एससीआर 51; बार काउंसिल ऑफ यू. पी. बनाम उत्तर प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्य। , [1973] 1 एससीसी 261; डी. जी. घोष एंड कंपनी

(एजेंट) (पी) लिमिटेड बनाम। केरल और अन्न राज्य। , [1980] 2 एस. सी. सी. 410; संघ होटल और रेस्तरां वी। भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 634,657,667-668; पश्चिम बंगाल राज्य बनाम। केसोरम इंडस्ट्रीज, (2004) 1 स्केल 425, 462. में।

केंद्रीय प्रांत और मोटर स्पिरिट और स्नेहक की बेरार बिक्री कराधान अधिनियम, (1938) और ए. आई. आर. (1939) एफ. सी. 1,8,40 के मामले पर भरोसा किया गया।

7.1 . संसद को दरों को सीमित करने की सर्वोच्च शक्ति दी गई है।

बिक्री कर जो अन्यथा बिक्री और खरीद की कुछ वस्तुओं के संबंध में राज्यों की अनन्य क्षमता के भीतर हैं। हमारे उद्देश्य के लिए प्रासंगिक खंड कला का खंड (ए) है। 286 (3) जो संसद को अनुमति देता है

अंतर-राज्यीय व्यापार या वाणिज्य में वस्तुओं को विशेष महत्व का घोषित करने वाला कानून बनाना। इस शक्ति का प्रयोग करते हुए, केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम की धारा 14। 1956 कुछ वस्तुओं को विशेष महत्व का घोषित किया है

अंतर-राज्यीय व्यापार या वाणिज्य। इसमें गैर-निर्मित और विनिर्मित दोनों रूपों में तंबाकू शामिल है। राज्यों को केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 15 के तहत राज्य के भीतर घोषित वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर बिक्री या खरीद मूल्य के अधिकतम 4 प्रतिशत की सीमा तक कर लगाने या अधिकृत करने से प्रतिबंधित कर दिया गया है। दिसंबर, 1956 में, राष्ट्रीय विकास परिषद, योजना आयोग, भारत सरकार और राज्यों ने सहमति व्यक्त की कि अन्य बातों के साथ-साथ तंबाकू के संबंध में बिक्री कर को केंद्रीय उत्पाद शुल्क पर अधिभार द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए, जिससे प्राप्त आय को उपभोग के आधार पर राज्यों के बीच वितरित किया जाना चाहिए, बशर्ते राज्यों से आय का आश्वासन दिया जाए। इसके अनुसार और वित्त आयोग की 30 सितंबर, 1957 की अपनी रिपोर्ट में की गई सिफारिशों के अनुसार, उत्पाद शुल्क

के अतिरिक्त शुल्क (विशेष महत्व के सामान) अधिनियम 1957 संसद द्वारा पारित किया गया था। अधिनियम का उद्देश्य चीनी, तंबाकू और मिल निर्मित कपड़ों पर केंद्र और राज्यों द्वारा लगाए गए बिक्री कर के प्रतिस्थापन में उत्पाद शुल्क का अतिरिक्त शुल्क लगाना और शुद्ध आय को सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2005] 1 एस. सी. आर.

इन करों में से, केंद्र शासित प्रदेशों को दी जाने वाली आय को छोड़कर, राज्यों को। प्रावधान किया गया था कि वह राज्य जो बिक्री पर कर लगाता है या

अंतर-राज्यीय व्यापार या वाणिज्य में विशेष महत्व की घोषित वस्तुओं की श्रेणी में निर्दिष्ट वस्तुएं, ताकि उन पर समान उत्पाद शुल्क लगाए जाने के बाद, बिक्री कर की दरें - किसी भी राज्य द्वारा लगाया गया शुल्क 1 अप्रैल, 1958 से केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 15 में प्रतिबंधों के अधीन था। [769 - सी-एच; 770-ए-बी]

रीः समुद्री सीमा शुल्क अधिनियम, [1964] की धारा 20 में संशोधन करने के लिए विधेयक

एस. सी. आर. 787; द सेंट्रल प्रोविंस एंड बरार सेल्स ऑफ मोटर स्पिरिट एंड लुब्रिकेंट्स टैक्सेशन एक्ट, (1938) ए. आई. आर. (1939) एफ. सी. 1 फेडरेशन ऑफ होटल एंड रेस्तरां बनाम। भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 634 और मद्रास प्रांत बनाम। ए. आई. आर. (1942) एफ. सी. 33 के बोड्डु पाइदन्ना ने इस पर भरोसा किया।

7.2 . ए. डी. ई. अधिनियम की धारा 3 आरोप अनुभाग है जिसके तहत

निर्मित या स्टॉक में रखी निर्दिष्ट वस्तुओं पर अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लगाया जाता है। कोई भी राज्य ए. डी. ई. अधिनियम की धारा 3 के तहत आने वाली वस्तुओं पर उसी कर योग्य घटना के लिए विलासिता कर नहीं लगा सकता है, अर्थात निर्माण पर संग्रहीत वस्तुओं के लिए, केवल वस्तुओं को विलासिता वस्तु के रूप में वर्णित करके। सूची I की प्रविष्टि 84 और सूची II की प्रविष्टि 62 के तहत प्रयोग की गई शक्तियों का अतिव्यापी होना तब स्पष्ट होगा। इसी तरह आयातित वस्तुओं का भंडारण या भंडारण सूची I की प्रविष्टि 83 के अंतर्गत आता है और इसे ऐसा नहीं बनाया जा सकता है - राज्यों द्वारा लगाए जाने का विषय। [770 - बी-ई]

7.3 . सूची II की प्रविष्टि 54 का दायरा बढ़ाते हुए,

इस तरह का कर लगाने के लिए राज्य बिक्री कर पर लगाए गए संवैधानिक प्रतिबंधों के परिणामस्वरूप एक संबंधित प्रतिबंध के अधीन है

अनुच्छेद 286 को केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 14 और 15 और एडीई अधिनियम, 1957 के साथ पढ़ा जाता है। संविधान के अनुच्छेद 366 के खंड (29-ए) के उपखंड (बी) के आधार पर अधिरोपित कर इस प्रकार उसी अनुशासन के अधीन हो जाता है जिसके लिए राज्य सूची की प्रविष्टि 54 के तहत कोई शुल्क लगाया जाता है। संविधान के अधीन बनाया गया है। जब संविधान के अनुच्छेद 286 को देखा जाता है तो स्थिति समान होती है। यदि कोई घोषित माल जो केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 14 में संदर्भित है, ऐसे हस्तांतरण, आपूर्ति या वितरण में शामिल है, जिसे अनुच्छेद 366 के खंड (29-ए) में संदर्भित किया गया है, तो किसी राज्य की बिक्री कर कानून जो उस पर बिक्री कर लगाने का प्रावधान करती है, उसे निर्दिष्ट प्रतिबंधों का पालन करना होगा।

वी. यू. पी. राज्य

739

केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 15 में। इसलिए कोई भी राज्य किसी वस्तु को विलासिता बताकर उसकी आपूर्ति पर कर लगाने की कोशिश नहीं कर सकता है। इस बात पर कोई विवाद नहीं हो सकता कि जहां तक उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश का संबंध है, अगर यह सूची II की प्रविष्टि 62 की उनकी व्याख्या के लिए नहीं होता, तो कर केवल प्रविष्टि 54 सूची II के लिए संदर्भित होता। यदि प्रविष्टि 62 सूची II माल के कराधान की अनुमति नहीं देती है,

यह शुल्क संवैधानिक रूप से टिकाऊ नहीं होगा। [771 - डी-जी]

7.4 . प्रविष्टि 62 सूची II को पढ़ने के लिए विलासिता की वस्तुओं को शामिल नहीं किया जा सकता है।

इन सभी संवैधानिक प्रतिबंधों को राज्यों को विलासिता वस्तुओं के रूप में वर्णित करके वस्तुओं की आपूर्ति पर कर लगाने की अनुमति देते हुए पारित करने की अनुमति दें। विलासिता की आपूर्ति और कुछ नहीं बल्कि वस्तुओं की आपूर्ति है क्योंकि सामान स्वयं विलासिता का निर्माण करते हैं। इसलिए भले ही तंबाकू विलासिता की वस्तु हो, लेकिन इसकी आपूर्ति पर कर राज्य की अनन्य क्षमता के भीतर है, लेकिन अनुच्छेद 286 के तहत निर्धारित संवैधानिक प्रतिबंधों के अधीन है।

केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 14 और 15 और अधिकांश

महत्वपूर्ण रूप से 1957 का ए. डी. ई. अधिनियम जिसके तहत तंबाकू पर कोई बिक्री कर नहीं लगाया जा सकता है यदि राज्य उस अधिनियम के तहत लाभ लेना चाहता है। उत्पाद शुल्क या सीमा शुल्क लगाने के अधिकारों के घटाव के बावजूद और जब राज्य वस्तुओं पर कर लगा सकते हैं तो राज्यों पर बिक्री कर लगाने का प्रतिबंध, यह निर्धारित करना होगा कि क्या सूची II की प्रविष्टि 62

इसमें वस्तुओं पर कर शामिल हैं। [771 - एच; 772-ए-सीजे

7.5 . कि विधायी सूचियों में कर योग्य घटनाओं पर प्रविष्टियाँ नहीं हैं

कला में संपूर्ण को भी मान्यता दी गई है और प्रदान किया गया है। 248 (2) जो समवर्ती या राज्य सूचियों में से किसी में भी उल्लिखित कर को अधिरोपित करने वाला कोई कानून बनाने के लिए संसद की शक्ति का प्रावधान करता है। यह अवशिष्ट शक्ति है

इसके अलावा यदि कोई वस्तु या वस्तु केवल कर योग्य घटना के संबंध में कर योग्य है, और यदि सभी कर योग्य घटनाओं का प्रावधान विभिन्न विधायी शीर्षों में किया गया है, तो उस टोकन द्वारा कोई भी वस्तु या वस्तु कर योग्य नहीं हो सकती है। यह राज्य सूची में प्रविष्टियों 57 और 58 सहित विभिन्न प्रविष्टियों को विषयहीन बना देगा। चूँकि यह न्यायालय यह स्वीकार नहीं कर सकता है कि कराधान प्रविष्टियाँ सभी कर योग्य घटनाओं को पूरी तरह से सूचीबद्ध करती हैं, इसलिए यह इस बात का पालन नहीं करता है कि सूची II की प्रविष्टि 62 माल को शामिल नहीं करती है। इसलिए केवल विधायी सूचियों और उनमें कर प्रविष्टियों के निर्माण पर यह कहना संभव नहीं है कि प्रविष्टि 62 सूची II राज्यों को विलासिता की वस्तुओं पर कर लगाने की अनुमति नहीं देती है। [772 - डी-एफ]

रीः समुद्री सीमा शुल्क अधिनियम, [1964] की धारा 20 में संशोधन करने के लिए विधेयक

एस. सी. आर. 787, संदर्भित।

8.1 . प्रविष्टि 62 के भीतर विभिन्न करों का संयोजन ही सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2005] 1 एस. सी. आर. है।

विशेष महत्व का। प्रविष्टि "मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ पर करों सहित विलासिता पर करों" की बात करती है। "सम्मिलित" शब्द को कुछ अर्थ दिया जाना चाहिए। साधारण भाषा में यह इंगित करता है कि "सम्मिलित" शब्द के बाद जो आता है वह शामिल होता है या इसमें निहित होता है या है

पूर्ववर्ती पूरे शब्द का एक भाग। सम्मिलित वस्तुओं की प्रकृति न केवल समग्र के चरित्र में भाग लेती है, बल्कि समग्र के स्पष्टीकरण के रूप में भी समझी जा सकती है। 'शामिल' शब्द कुछ संदर्भों में सीमा का शब्द हो सकता है। सूची II की प्रविष्टि 62 के संदर्भ में यह होगा इसका मतलब यह नहीं है कि 'विलासिता' शब्द मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ तक ही सीमित होगा, बल्कि केवल उस विशेषता पर जोर देगा जो समूह के लिए सामान्य है। यदि विलासिता को कुछ ऐसे अर्थ के रूप में समझा जाता है जो विशुद्ध रूप से आनंद के लिए और जीवन की आवश्यकताओं से परे है, तो इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ इस तरह की समझ के भीतर आएंगे। इसके अलावा,

मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ सभी गतिविधियाँ हैं। विलासिता भी एक गतिविधि का अर्थ रखने में सक्षम है और मुख्य रूप से और

पारंपरिक रूप से इस तरह से परिभाषित किया गया है। यह केवल व्युत्पन्न रूप से और हाल ही में विलासिता के एक लेख को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है। कोई यह मान सकता है कि एक प्रविष्टि के तहत इन करों का युग्मन आकस्मिक नहीं था, बल्कि इन सामान्य विशेषताओं के कारण था। [772 - एच; 773-ए-डी]

दक्षिण गुजरात रूफिंग टाइल्स निर्माता बनाम। गुजरात राज्य, [1976]

4 एस. सी. सी. 601, संदर्भित।

8.2 . जहाँ दो या दो से अधिक शब्द समान अर्थ के लिए अतिसंवेदनशील हैं

एक साथ जोड़े जाने पर, उन्हें उनके संज्ञानात्मक अर्थों में उपयोग किया जाता है। वे अपने रंग को एक दूसरे से लेते हैं और एक दूसरे के योग्य होते हैं, सामान्य शब्द का अर्थ कम सामान्य के समान अर्थ तक सीमित होता है। [773 - ई]

मूर्तियों की व्याख्या पर मैक्सवेल, 12 वीं संस्करण। ; संदर्भित किया गया। 8.3 . वर्तमान संदर्भ में 'विलासिता' का सामान्य अर्थ है -

समझाया या स्पष्ट किया गया है और इसे मनोरंजन, मनोरंजन, जुआ जैसे कम सामान्य शब्दों के अनुरूप अर्थों में समझा जाना चाहिए।

और सट्टेबाजी, जो इसके साथ जुड़े हुए हैं। [774 - डी} यू. पी. राज्य बनाम राजा आनंद, [1967] 1 एससीआर 362; रेनबो स्टील्स लिमिटेड बनाम। सी. एस. टी., [1981] 2 एस. सी. सी. 141 और बॉम्बे राज्य बनाम। अस्पताल मजदूर सभा, ए. आई. आर. (1960) एस. सी. 610, संदर्भित।

- 9.1 . एक समाज का सिद्धांत एक विश्वासघाती हो सकता है जब तक कि

जिन समाजों से 'सोसायटी' संबंधित हैं, उन्हें जाना जाता है। हो सकता है खतरा

उपस्थित तब होता है जब 'समाज' का सुझाव देने के लिए निकटता के अलावा कोई अन्य कारक नहीं होता है। लेकिन जहाँ, यहाँ की तरह, व्यापक अर्थ का एक शब्द है जो अस्पष्टता से मुक्त नहीं है, वहाँ 'सम्मिलित' जैसे शब्दों का जोड़ समाजों का पर्याप्त संकेत है। वर्तमान संदर्भ में 'शामिल' शब्द शामिल शब्द के साथ एक समानता या साझा विशेषताओं या विशेषताओं को इंगित करता है। [775 - एफ-जी]

9.2 . जहाँ वस्तुओं को कराधान का उद्देश्य बनाया गया है, या तो

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, विधायी सूचियों में प्रविष्टियों ने विशेष रूप से ऐसा कहा है या ढोंग ऐसा है कि कर का विषय निम्नलिखित है - आवश्यक प्रभाव। सूची II में ही राज्य विधानमंडल को दिया गया है।

प्रविष्टि 53 के तहत माल के प्रवेश पर, प्रविष्टि 56 के तहत 'माल और यात्रियों के परिवहन' पर, प्रविष्टि 57 के तहत 'वाहनों' पर और प्रविष्टि 58 के तहत 'जानवरों और नौकाओं' पर कर लगाने का अधिकार। किसी भी विधायी सूची में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि कर केवल एक विशेषता के संदर्भ में लगाया जा सकता है। किसी उद्देश्य के संदर्भ के बिना कराधान के उद्देश्य के रूप में एक विशेषता विधायी अशांति का कारण बनेगी, कराधान प्रविष्टियों के बीच सावधानीपूर्वक सीमांकन को धुंधला कर देगी और केंद्र और राज्यों के बीच राजस्व के संग्रह और वितरण के लिए संविधान में सन्निहित विस्तृत योजना को परेशान कर देगी। व्याख्या के सामान्य सिद्धांतों के अनुप्रयोग पर, यह माना जाता है कि सूची II की प्रविष्टि 62 में 'विलासिता' शब्द का अर्थ है आनंद लेने या उसमें लिप्त होने की गतिविधि जो महंगी है या जिसे आम तौर पर आवश्यकता से परे माना जाता है।

समाज के एक औसत सदस्य की आवश्यकताएँ और विलासिता की वस्तुएँ नहीं।

[775 - G-H; 776-A-CI

9.3 . वर्तमान संविधान के निर्माण से पहले बहस

संविधान सभा दर्शाती है कि यह सुझाव कि सूची II की प्रविष्टि 62 को "मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और मनोरंजन पर कर" के रूप में पढ़ा जाना चाहिए।

जुआ, दौड़ और इस तरह की अन्य विलासिताओं को इस आधार पर नकार दिया गया था कि इससे प्रवेश का दायरा कम हो जाएगा। नौकरों पर कर का उदाहरण जो "संभवतः बिना संशोधन के प्रविष्टि के भीतर होना चाहिए" को संभवतः संशोधन द्वारा बाहर रखा गया था। वास्तव में "मामूली और घरेलू कर्मचारियों पर कर", 1915-1919 अधिनियम के तहत बनाए गए कर नियमों की अनुसूची II के तहत, प्रांतीय विधान परिषद

की क्षमता के भीतर या किसी भी स्थानीय प्राधिकरण की क्षमता के भीतर राज्य विधान परिषद के अधिकार के साथ लगाया गया था। यह राज्य विधान परिषद को 742 को दिए गए अधिकार से अलग एक प्रविष्टि थी।

कराधान नियमों की अनुसूची I के तहत 'किसी भी निर्दिष्ट विलासिता पर कर' लगाया जाता है। किसी भी स्थिति में 'सेवकों और सेवकों' की तुलना शायद ही की जा सकती है।

" सामान "। यह शायद उनका रोजगार था जिसे माना जाता था

संभव विलासिता। इस बात पर फिर से जोर दिया जाना चाहिए कि सुझाव की अस्वीकृति विलासिता वस्तुओं के संभावित बहिष्कार के कारण नहीं थी।

[777 - जी-एच; 778-ए-बी]

9.4 . संविधान लागू होने के बाद निर्णय को छोड़कर

1976 में अब्दुल कादिर मामले में इस अदालत की सूची II की प्रविष्टि 62 को लागू नहीं किया गया था।

जुआ और सट्टेबाजी पर कर लगाने या होटलों और रेस्तरां में सुविधाओं के आनंद या भोग के प्रावधानों पर कर लगाने के उद्देश्य से बचत करें। [778 - सी]

वेस्टर्न इंडिया थिएटर्स लिमिटेड बनाम छावनी बोर्ड, पूना, [1959]

सप. 2 एससीआर 63,69; ए. बी. अब्दुल कादिर बनाम केरल राज्य, [1962] 2 एस. सी. आर. 741; बॉम्बे राज्य बनाम। आर. एम. डी. चमरबागवाला, [1957] एस. सी. आर. 874; एक्सप्रेस होटल्स बनाम। गुजरात राज्य, [1989] 3 एस. सी. सी. 677; ई. एल. ई. एल. होटल्स एंड इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड और अन्य। वी. भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 698; ईस्ट इंडिया होटल्स लिमिटेड बनाम। पश्चिम बंगाल राज्य, [1990] सप. आई एस. सी. सी. 755; स्पेन्स होटल्स प्रा. लिमिटेड और एन. आर. वी. पश्चिम बंगाल राज्य और अन्य। , [1991] 2 एस. सी. सी. 154 और ईस्ट इंडिया होटल्स लिमिटेड, श्रीनगर बनाम. जम्मू और कश्मीर राज्य और अन्न. , [1994] सप. 2 एस. सी. सी. 580, संदर्भित।

10.1 . सूची II की प्रविष्टि 62 का संवैधानिक इतिहास बताएगा

1915 के बाद से सभी संवैधानिक अधिनियमों में 'विलासिता कर' से संबंधित प्रविष्टि के अस्तित्व के बावजूद, 1993 तक वस्तुओं पर कर (अब्दुल कादिर के मामले को छोड़कर) लगाने की कभी मांग नहीं की गई थी। विलासिता वस्तुओं पर कर लगाने का तरीका हमेशा उन्हें भारी दरों पर उत्पाद शुल्क, बिक्री कर, सीमा शुल्क आदि की मौजूदा वित्तीय व्यवस्थाओं के अधीन करना था।

अनुच्छेद 366 (29 ए) या अनुच्छेद 286 या सूची I की प्रविष्टियां 83 और 84 में उन वस्तुओं की प्रकृति के बारे में कोई भेद नहीं किया गया है जो बिक्री उत्पाद शुल्क या आयात का विषय हो सकते हैं, चाहे वे आवश्यकता की वस्तुएं हों या विलासिता की वस्तुएं। यही वह अर्थ भी है जिसमें राज्यों ने हमेशा से समझा

है। 1953-54 में बिक्री कर के उद्गृहण के संबंध में कराधान जांच आयोग द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में दिए गए उनके साक्ष्य में बताए गए शब्द। 1778-ई-जीआई

ए. बी. अब्दुल कादिर बनाम भारत संघ, [1962] 2 एस. सी. आर. 741, संदर्भित।

कराधान जांच आयोग की रिपोर्ट, (1953-54), खंड। IV भाग

III, संदर्भित।

743

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य

10.2 . ऐतिहासिक रूप से, विलासिता वस्तुओं पर कर को प्रवेश के एक हिस्से के रूप में देखा जाता था

54 सूची II या सूची I की प्रविष्टियाँ 83 और 84, लेकिन सूची II की प्रविष्टि 62 के तहत कर के रूप में नहीं। एकमात्र अपवाद केरल वैलिडेटिंग क़ानून था जो अब्दुल कादिर का विषय था जहाँ निर्धारिती ने नहीं किया था।

यह प्रश्न कि प्रविष्टि 62 वस्तुओं और वस्तुओं से संबंधित है और विरोध का एकमात्र बिंदु यह था कि तंबाकू विलासिता की वस्तु नहीं थी। केवल 1993 में महाराष्ट्र राज्य ने बॉम्बे विलासिता कर अधिनियम, 1993 लागू किया, जिसमें वस्तुओं पर सीधे विलासिता कर लगाया गया था। इसे 1994 में वापस ले लिया गया था लेकिन अन्य राज्यों ने जल्द ही इस तरह के कानूनों का अनुसरण किया, जिसकी परिणति इस तरह के कानूनों की जल्दबाजी में हुई।

[779 - डी-ई]

ए. बी. अब्दुल कादिर और अन्य। वी. केरल राज्य, [1976] 2 एससीआर 690,

संदर्भित किया गया।

नागरिक मूल न्यायनिर्णयः की लिखित याचिका (सी) संख्या 567

1994 .

(भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत)

के साथ

डब्ल्यू. पी. (ग) संख्या। 568-569 / 94 , C.A.Nos। 123-125 / 95 , 6891 , 7870/96 , 2123

2127 , 2552-2553 / 99 , 6365 2000 से।

मोहन परासरन, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल, हरीश एन. साल्वे, एस.

गणेश, नवरोज सीरवई, सुनील गुप्ता (एडिशनल। एडॉवकेट जनरल, यू. पी.), के. के. वेणुगोपाल (एन. पी.), एम. एन. राव (एन. पी.), बी. बी. आहूजा, बी. सेन, राकेश द्विवेदी, गोपाल सुब्रमण्यम, आर. एफ. नरीमन, पल्लव शीशोदिया, सुश्री कविता दहिया, सुश्री सुषमा शर्मा, संजीव दहिया, अजय अग्रवाल, सुश्री मेघाली

पी. एच. पारेख के लिए बर्थाकुर, राजन नारायण, विवेक विश्नोई, अरोही भल्ला, गौरव केजारीवार, पुनीत दत्त त्यागी, मुकेश वर्मा, पवन कुमार, सुश्री प्रोमिला, तुषार राव, ए. रमेश, ई. आर. कुमार, सुश्री रंजीता रोहतगी, अजय के. जैन, नंद किशोर, प्रमोद दयाल, सुश्री राधा रंगास्वामी, दीपायन

चौधरी, सुश्री भारती, प्रितेश कपूर, राजीव त्यागी, विष्णु शर्मा, शैल कुमार द्विवेदी (एन. पी.), बी. वी. बलराम दास (एन. पी.), बी. कृष्ण प्रसाद (एन. पी.), आर. सी. वर्मा (एन. पी.), दयान कृष्णन, सुश्री निरंजना सिंह, अभिषेक चौधरी,

जनार्दन दास, श्वेतकेतु मिश्रा, सुश्री मौसमी गहलोट, के. के. साहा, मनोज सक्सेना, मोहन प्रसाद मेहरिया, सिद्धार्थ अग्रवाल, राजशेखर राव, सत्यकाम, रागेंथ बसंत, आशीष जैन, अरुणाभ पटनायक, करण भरीहोक, एस. के. मित्रा, खेम चंद, कविता वाडिया के लिए भरत सिंह, श्रीश कुमार मिश्रा (एन. पी.), ई. आर. कुमार और पी. एच. पारेख के लिए सुश्री रंजीता रोहतगी उपस्थित दलों के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

रुमा पाल, जे. निर्धारिती/अपीलार्थी या तो निर्माता हैं,

तम्बाकू और तम्बाकू उत्पादों के विक्रेता या विक्रेता। उन्होंने चुनौती दी है

तम्बाकू और तंबाकू उत्पादों पर विलासिता कर लगाना और लगाना

62 की प्रविष्टि में शब्द के अर्थ के भीतर उन्हें "विलासिता" के रूप में माना गया है।

सूची II.

संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि 62 संबंधित है।

"मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ पर करों सहित विलासिता पर करों" के संबंध में कानून बनाने के लिए राज्य विधानमंडलों की अनन्य शक्ति। कई राज्यों ने कानून बनाए हैं जिनके बारे में उनका दावा है कि वे इस प्रविष्टि के तहत विलासिता पर कर लगाने के अधिकार के लिए संदर्भित हैं। हम विलासिता पर उत्तर प्रदेश कर अधिनियम, 1955, विलासिता पर आंध्र प्रदेश कर अधिनियम, 1987 और विलासिता पर पश्चिम बंगाल कर अधिनियम, 1994 से संबंधित हैं। इन कानूनों की विधायी क्षमता को निर्धारिती द्वारा विभिन्न मंचों के समक्ष चुनौती दी गई थी-कुछ मामलों में आंशिक रूप से सफलतापूर्वक, अन्य में नहीं। जिस हद तक निर्धारिती असफल रहे, उन्होंने हमारे सामने निर्णयों को चुनौती दी है। जिन मामलों में निर्धारिती सफल रहे हैं, संबंधित राज्य ने अपील दायर की है।

राज्यों ने "विलासिता" शब्द की अपनी व्याख्या में अंतर किया है।

प्रविष्टि 62 सूची II के संदर्भ में और विशेष क़ानून के दृष्टिकोण से उन्होंने तर्क दिया है कि उनका विधायी रूप से बचाव किया जाना चाहिए। सक्षम। इस प्रकार यद्यपि हल किया जाने वाला प्रमुख प्रश्न होगा

सूची-II की प्रविष्टि 62 के दायरे में, तर्कों के लिए प्रश्न का समाधान करने से पहले, हमारे सामने विवादित तीन कानूनों द्वारा लगाए जाने वाले कर की प्रकृति के निर्धारण की आवश्यकता होती है।

उत्तर प्रदेश विलासिता पर कर अधिनियम 1995

14 मई, 1994 को विलासिता पर उत्तर प्रदेश कर अधिनियम 1994 (यू. पी. अध्यादेश संख्या 8/94) के रूप में जाना जाने वाला एक अध्यादेश जारी किया गया था। अध्यादेश का उद्देश्य, जैसा कि प्रस्तावना में कहा गया है, "तंबाकू की आपूर्ति और उससे जुड़े या उससे आनुषंगिक मामलों पर कर लगाने और संग्रह करने का प्रावधान करना" था। इसमें कुछ खंड शामिल थे जिनमें से कुछ प्रासंगिक थे। उद्धृत किए जाते हैं।

विलासिता कर लगाने के लिए अध्यादेश की धारा 3

इस प्रकार पढ़िए:

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

" विलासिता कर का शुल्क। - प्रत्येक तम्बाकू विक्रेता विलासिता का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होगा।

बीस से अधिक नहीं की दर पर "प्राप्तियों" के उसके कारोबार पर कर

पांच प्रतिशत, जैसा कि राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा निर्दिष्ट कर सकती है। और तंबाकू के विभिन्न वर्गों के लिए अलग-अलग दरें निर्दिष्ट की जा सकती हैं:

बशर्ते कि एक "तम्बाकू व्यापारी" जो निर्माण या प्राप्त नहीं करता है

राज्य के बाहर से आने वाला तंबाकू उत्तरदायी होगा। o उसके कारोबार पर कर का भुगतान करें

उसकी प्राप्तियों का कारोबार दो लाख से अधिक होने की तारीख से प्राप्तियों की संख्या रुपये:

बशर्ते कि तंबाकू की आपूर्ति की एक श्रृंखला में, कर

राज्य में सबसे पहले "तंबाकू विक्रेताओं" से प्राप्त किया जाए और एक क्रमिक "तम्बाकू विक्रेता" को कर के भुगतान से छूट दी जाएगी यदि वह

निर्धारित तरीके से ऐसे लोगों पर कर के भुगतान का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

तम्बाकू "।

(जोर दिया गया)

"रसीद" और "टोबैकोनिस्ट" जिन शब्दों पर जोर दिया गया है

हमारे द्वारा खंड को क्रमशः धारा 2 (ई) और 2 (एच) में परिभाषित किया गया था।

ओडब्ल्यूएसः

2 (ई) "रसीद" का अर्थ हैः

(i) एक तम्बाकू व्यापारी द्वारा की गई तंबाकू की आपूर्ति के संबंध में

उस समय बेचे गए तंबाकू के संबंध में उसके द्वारा किया गया या उसकी डिलीवरी से पहले और कीमत यदि अलग से ली जाती है,

या वितरण या विलासिता कर के रूप में प्राप्त राशि जब ऐसी लागत हो या राशि अलग से ली जाती है; और

((ii) तम्बाकू विक्रेता द्वारा अन्यथा की गई तंबाकू की आपूर्ति के संबंध में।

बिक्री के रूप में, सामान्य कीमत जिस पर तंबाकू बेचा जाता है,

और "सामान्य मूल्य" शब्द का वही अर्थ होगा जो

केंद्रीय उत्पाद शुल्क और नमक अधिनियम की धारा 4 में इसे सौंपा गया है,

1944 ;

2 (ज) "टोबैकोनिस्ट" का अर्थ हैः

((i) एक निर्माता जिसका एक वर्ष में प्राप्तियों का कारोबार एक वर्ष से अधिक है।

746 लाख रुपये जो बिक्री के माध्यम से या अन्यथा तंबाकू की आपूर्ति करते हैं।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[

2005] 1 एस सी आर।

और इसमें कोई भी व्यक्ति शामिल है जो व्यवसाय के उद्देश्य से प्राप्त करता है किसी अन्य व्यक्ति से किया गया निर्माण, चाहे वह नौकरी पर हो या नहीं

कार्य आधार पर, लेकिन इसमें कोई भी व्यक्ति शामिल नहीं है जो निर्माण करता है बिना किसी स्वामित्व प्राप्त किए केवल नौकरी के आधार पर तंबाकू

किसी भी स्तर पर उस पर अधिकार;

((ii) कोई भी व्यक्ति जो व्यवसाय के उद्देश्यों के लिए लाता है या लाता है

राज्य के बाहर किसी भी स्थान से भेजा गया और जो आपूर्ति करता है बिक्री के माध्यम से या अन्यथा ऐसा तंबाकू;

((iii) कोई भी व्यक्ति जो राज्य के भीतर किसी स्थान से तंबाकू की आपूर्ति करता है -

बिक्री के माध्यम से या अन्यथा राज्य के बाहर कोई भी स्थान;

((iv) कोई भी व्यक्ति जो बिना विनिर्मित वस्तु नहीं खरीदता है या अन्यथा प्राप्त नहीं करता है।

एक ब्रांड नाम के तहत तंबाकू लेकिन बिक्री के माध्यम से आपूर्ति या

अन्यथा एक सीलबंद पात्र में इस तरह के गैर-निर्मित तंबाकू एक ब्रांड नाम;

व्याख्याः - संदेह को दूर करने के लिए, यह स्पष्ट किया जाता है कि एक व्यक्तिः

(1) जो विशेष रूप से गैर-निर्मित तंबाकू की आपूर्ति करता है या नहीं

सीलबंद पात्र में लेकिन किसी ब्रांड नाम के तहत नहीं; या

(2) उपखंड (iii) में निर्दिष्ट व्यक्ति नहीं होने के कारण जो विशेष रूप से

पंजीकृत व्यक्ति से खरीद के माध्यम से या अन्यथा तंबाकू प्राप्त करता है।

टोबैकोनिस्ट;

इन उद्देश्यों या उद्देश्यों के लिए तम्बाकू विक्रेता नहीं माना जाएगा। खंड;

संक्षेप में इसलिए यूपी अधिनियम पर विलासिता कर लगाने का प्रावधान है

एक तम्बाकू व्यापारी द्वारा तंबाकू की आपूर्ति से प्राप्त रसीदें। यह आपूर्ति का कार्य है जो कर योग्य घटना है। वास्तव में उत्तर प्रदेश अध्यादेश की प्रस्तावना, जैसा कि यह मूल रूप से थी, में कहा गया था कि इसका उद्देश्य "तंबाकू की आपूर्ति पर कर लगाने और संग्रह" का प्रावधान करना था। यहां हम पक्षों के बीच विवाद के मूल को संक्षेप में इंगित कर सकते हैं यदि यह अधिनियम सूची II की प्रविष्टि 54 के लिए उस प्रविष्टि में "माल की बिक्री या खरीद पर कर" शब्दों के भीतर संदर्भित है जैसा कि निर्धारिती दावा करते हैं, तो कर विषय होगा। तम्बाकू पर बिक्री कर लगाने की राज्य की शक्ति पर कुछ संवैधानिक प्रतिबंधों के लिए। यदि दूसरी ओर इसे "विलासिता पर कर" के रूप में सूची II की प्रविष्टि 62 के लिए संदर्भित किया जाता है तो ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं होगा।

747 के उच्च न्यायालय में निर्धारिती द्वारा लिखित याचिकाएं दायर की गई थीं।

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

इलाहाबाद ने उत्तर प्रदेश अध्यादेश संख्या 8/94 को इस आधार पर चुनौती दी कि यह संविधान के अनुच्छेद 14,19,245,286,301 और 304 के अधिकार से बाहर है। उसी समय संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत रिट याचिकाएं दायर की गईं। यह न्यायालय इस घोषणा के लिए कि 1994 का यू. पी. अध्यादेश 8 संविधान के अधिकार से बाहर था, मूल रूप से इस आधार पर कि लेवी सार में थी, बिक्री पर कर था।

कार्यवाही के लंबित रहने के दौरान, 1994 का यू. पी. अध्यादेश संख्या 8

1994 के यू. पी. अध्यादेश No.22 द्वारा संशोधित किया गया था जो 28 सितंबर, 1994 को आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तावना और 'टोबैकोनिस्ट' की परिभाषा को बदल दिया गया था। जहाँ तक प्रस्तावना का संबंध था, तम्बाकू की आपूर्ति पर कर वाक्यांश को "तंबाकू पर विलासिता कर" पढ़ने के लिए बदल दिया गया था।

लेकिन प्रस्तावना में परिवर्तन के बावजूद कानून के मुख्य भाग में कर योग्य घटना में कोई संबंधित परिवर्तन नहीं हुआ जो आपूर्ति पर कर बना रहा। टोबैकोनिस्ट की परिभाषा का स्पष्टीकरण भी था

पहले के स्पष्टीकरण को हटाने के बाद प्रतिस्थापित किया गया। प्रतिस्थापन नहीं है

सामग्री।

2 नवंबर, 1994 को उच्च न्यायालय ने रिट याचिकाओं को स्वीकार कर लिया

विलासिता कर के उद्ग्रहण पर आक्षेप करना। उच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि लेवी संविधान के अंतर्गत थी और विधायी रूप से सक्षम थी। इसके बाद ए. बी. अब्दुल कादिर और अन्य मामलों में इस न्यायालय का निर्णय। वी. केरल राज्य, [1976] 2 एस. सी. आर. 690 में यह अभिनिर्धारित किया गया था कि तंबाकू विलासिता की वस्तु है और सूची II की प्रविष्टि 62 के अर्थ के भीतर तंबाकू पर कर एक विलासिता कर होगा।

उच्च न्यायालय के अनुसार, तंबाकू में अध्यादेश के तहत प्रदान किए गए सभी प्रकार के तंबाकू शामिल हैं और राज्य के भीतर कर लगाया जा सकता है, चाहे वह राज्य के बाहर से भेजा गया हो या राज्य के बाहर भेजा गया हो और तंबाकू का व्यापार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति।

तंबाकू जैसी विलासिता की वस्तुओं पर विलासिता कर लगेगा, भले ही तंबाकू का सेवन कहीं भी किया जाए। हालांकि, उच्च न्यायालय ने कहा कि विलासिता कर लगाने से व्यापार और वाणिज्य और संभोग की स्वतंत्रता बाधित होती है और यह संविधान के अनुच्छेद 301 का उल्लंघन है और चूंकि अनुच्छेद 304 (बी) के तहत राष्ट्रपति की कोई पूर्व सहमति प्राप्त नहीं की गई थी, इसलिए यह माना गया कि राज्य कर नहीं लगा सकता है। राज्य का यह तर्क कि तंबाकू स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है और इसलिए, इसमें व्यापार करने का कोई मौलिक अधिकार नहीं है, नकार दिया गया। यह अभिनिर्धारित किया गया था कि तंबाकू को शराब के बराबर नहीं रखा जा सकता है जिसे इस न्यायालय ने "रेज़ एक्स्ट्रा कॉमर्सियम" माना था। यह भी माना गया कि विवादित शुल्क किसी भी तरह से एक नियामक उपाय नहीं था। उच्च न्यायालय भी इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि

तम्बाकू उत्पादों के संबंध में कर लगाने के उद्देश्य से मनमाने आधार पर वर्गीकरण किया गया था। रिट याचिकाएँ 748 थीं।

[2

005] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

तदनुसार अनुमति दी गई और विलासिता कर के उद्ग्रहण को इस आधार पर निरस्त कर दिया गया कि यह संविधान के अनुच्छेद 14 और 301 का उल्लंघन करता है। विशेष अवकाश

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय से रिट याचिकाकर्ता (इस हद तक कि उच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि लेवी विधायी रूप से सक्षम थी) के साथ-साथ उत्तर प्रदेश राज्य द्वारा भी याचिकाएं दायर की गई हैं। उच्च न्यायालय का अंतिम निष्कर्ष।

2 जनवरी को कई विशेष अनुमति याचिकाओं में अनुमति दी गई थी।

1995. अपीलों को आर्ट के तहत रिट याचिकाओं के साथ जोड़ने का निर्देश दिया गया था। 32. इस आशय की अंतरिम राहत दी गई कि व्यापारी (तंबाकू विक्रेता) विवादित अध्यादेश के अनुसार सक्षम प्राधिकारी के पास अपना विवरणी दाखिल करेंगे। अपील के लंबित रहने के दौरान अधिकारियों द्वारा इस तरह से दाखिल किए गए विवरणी पर कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। यदि विक्रेताओं की चुनौती विफल हो जाती है, तो विक्रेता देय राशि के भुगतान के लिए उत्तरदायी होंगे।

इस प्रकार दाखिल किए गए विवरणी के आधार पर किए गए मूल्यांकन के अनुसार।

14 मई, 1995 को उत्तर प्रदेश अध्यादेश No.22/94 को निरस्त कर दिया गया और प्रतिस्थापित कर दिया गया।

उत्तर प्रदेश विलासिता कर अधिनियम 1995 द्वारा जो उक्त तिथि को लागू हुआ। अधिनियम ने बिना किसी भौतिक परिवर्तन के अध्यादेश 22/94 को पुनः प्रस्तुत किया। इस न्यायालय के समक्ष दलीलों में उपयुक्त संशोधन किया गया था।

17 सितंबर, 1995 को लक्जरी पर यू. पी. कर अधिनियम, 1995 लागू किया गया था।

1995 के यू. पी. अध्यादेश No.39 द्वारा निरस्त। इसलिए, 1995 से उत्तर प्रदेश राज्य में कोई विलासिता कर नहीं लगाया गया है और जहां तक उत्तर प्रदेश राज्य का संबंध है, यह मुद्दा 14 मई, 1994 से 17 सितंबर, 1995 की अवधि के लिए प्रासंगिक है। विलासिता पर आंध्र प्रदेश कर अधिनियम, 1987

यह अधिनियम मोटे तौर पर वस्तुओं और विशेष रूप से तंबाकू की बिक्री और आपूर्ति पर विलासिता कर लगाने के संबंध में यूपी अधिनियम के दायरे और संचालन दोनों के समान है। इस अधिनियम ने शुरू में "एक होटल और एक कॉर्पोरेट अस्पताल में प्रदान की जाने वाली विलासिता" पर विलासिता कर लगाने का प्रावधान किया था। 1996 में अधिनियम को 1996 के आंध्र प्रदेश अधिनियम संख्या 28 द्वारा संशोधित किया गया था, जिसके द्वारा "जीवन की आवश्यकताओं के अलावा आनंद के लिए" निर्दिष्ट वस्तुओं पर विलासिता कर लगाने की मांग की गई थी (धारा 2 (जी. जी. जी.)) निर्दिष्ट वस्तुएं विभिन्न रूपों में तंबाकू

चबाना और सिगरेट हैं। राज्य में तंबाकू की आपूर्ति के पहले बिंदु पर "बिक्री या अन्यथा" कर लगाया जाता है। धारा 3-ए, जिसे 1996 में पेश किया गया था, "तंबाकू पर कर" का प्रावधान करती है।

इसमें लिखा हैः

" 3 - तम्बाकू विक्रेताओं पर कर-(1) इस अधिनियम के प्रावधानों के अधीन,

प्राप्तियों के कारोबार पर कर लगाया और एकत्र किया जाएगा।

विलासिता की आपूर्ति से संबंधित एक तम्बाकू व्यापारी, अर्थात्, तंबाकू

बिक्री के माध्यम से या अन्यथा अनुसूची में निर्दिष्ट उत्पाद

कर की दर और अनुसूची में निर्दिष्ट लेवी के बिंदु पर।

" रसीद "को धारा 2 (जेजे) में इस प्रकार परिभाषित किया गया है

" तम्बाकू के संबंध में रसीद का अर्थ है, (क) तंबाकू उत्पादों की तरह विलासिता की आपूर्ति के संबंध में

उसके द्वारा या दूसरों द्वारा बिक्री के माध्यम से, मूल्यवान राशि

ऐसी बिक्री के लिए उसके द्वारा प्राप्त या प्राप्य प्रतिफल सहित तम्बाकू के संबंध में उसके द्वारा किए गए किसी भी कार्य के लिए ली गई कोई राशि

वितरण के समय या उससे पहले इस प्रकार बेचे गए उत्पाद और

किसी भी प्राथमिक या द्वितीयक पैकिंग की कीमत, यदि अलग से ली जाती है;

और

(ख) द्वारा बनाए गए तंबाकू उत्पादों की विलासिता की आपूर्ति के संबंध में

उसे बिक्री के अलावा, सामान्य कीमत जिस पर

तम्बाकू उत्पाद बेचे जाते हैं "।

एस. 2 (के. के. के.) में एक तम्बाकू व्यापारी को इस प्रकार परिभाषित किया गया है

" टोबैकोनिस्ट "का अर्थ है वह व्यक्ति जो बिक्री के माध्यम से आपूर्ति करता है।

या अन्यथा विलासिता, जैसे, उसके द्वारा निर्मित तंबाकू उत्पाद या

अन्य राज्यों से या इस राज्य के अन्य व्यक्तियों से खरीदा गया और

इसमें कोई भी व्यक्ति शामिल है जो व्यवसाय के उद्देश्य से प्राप्त करता है

किसी भी व्यक्ति से किया गया उत्पादन चाहे वह नौकरी पर हो या नहीं

आधार "।

एपी उच्च न्यायालय के समक्ष कई रिट याचिकाएं दायर की गईं जिन्हें चुनौती दी गई थी

अधिनियम में संशोधन यह दावा करते हुए कि कर माल की बिक्री पर एक कर था और जहां तक यह कला के संवैधानिक अनुशासन का उल्लंघन करता है। 286 , 301 , कला. 246 प्रविष्टि 52 सूची I और कला के साथ पढ़ें। 14 , अल्ट्रा वायर्स था। इन्हें 12 नवंबर, 1998 के एक सामान्य निर्णय द्वारा खारिज कर दिया गया था। उच्च न्यायालय ने आंध्र प्रदेश अधिनियम की वैधता को बरकरार रखा और कहा कि राज्य सूची II की प्रविष्टि 62 के तहत अधिनियम को लागू करने में सक्षम है। उच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि यह अधिनियम तंबाकू और तंबाकू उत्पादों नामक विलासिता वस्तुओं की आपूर्ति पर एक कर था और यह बिक्री पर कर नहीं था जैसा कि रिट याचिकाकर्ताओं द्वारा तर्क दिया गया था। यह माना गया कि बिक्री की घटना को एक उपाय के रूप में अपनाया गया था

मूल्यांकन का उद्देश्य और लेवी के आवश्यक चरित्र को नहीं बदला।

यह

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

यह अभिनिर्धारित किया गया था कि राज्य ने कब्जे वाले क्षेत्र पर अतिक्रमण नहीं किया था तम्बाकू बोर्ड अधिनियम, 1975 द्वारा सूची की प्रविष्टि 52 के तहत संसद और यह कि अनुच्छेद 301 का कोई उल्लंघन नहीं हुआ था क्योंकि अधिनियम के तहत अंतर-राज्य लेनदेन को विलासिता कर के उद्ग्रहण से छूट दी गई थी। अनुच्छेद 14 के आधार पर कर को दी गई चुनौती को भी नकार दिया गया।

कई विशेष अवकाश याचिकाओं में अनुमति दी गई थी जो दायर की गई थीं

1 अप्रैल, 1999 को आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्णय से और एक अंतरिम

आदेश उन्हीं शर्तों में दिया गया था जो इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले से उत्पन्न मामलों में दिए गए थे। पश्चिम बंगाल विलासिता कर अधिनियम, 1994

अधिनियम की धारा 2 (सी) विलासिता को इस प्रकार परिभाषित करती है जिसका अर्थ है "अनुसूची में निर्दिष्ट वस्तुएं, उपभोग के लिए, आवश्यकता से अधिक।

जीवन "। प्रारंभ में, तंबाकू और तंबाकू उत्पादों के साथ-साथ पान मसाला से संबंधित अनुसूचित वस्तुएँ। अनुसूची में समय-समय पर संशोधन किया गया है और अब इसमें "विलासिता" शीर्षक के तहत 34 वस्तुएं शामिल हैं। मूल वस्तुओं को अनुसूची के आइटम 1 से 5 तक शामिल किया गया है। 6 और 8 से 21 तक की वस्तुओं में मिल से बने कपड़े, जूते, पतलून और जींस, शर्ट और टी-शर्ट, कोट जैकेट, ब्लेजर और सूट, घड़ियां, स्नान-कक्ष की फिटिंग, बिजली के स्विच, धूप का चश्मा, फव्वारा पेन और डॉट पेन, होम थिएटर उपकरण, संगीत प्रणाली और वीडियो कैमरा शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक वस्तु को विलासिता के रूप में वर्गीकृत किया जाता है यदि उनका मूल्य प्रत्येक वस्तु के खिलाफ निर्दिष्ट विशिष्ट दरों से अधिक हो। मद 22 से 34 उन वस्तुओं से संबंधित हैं जो भारत में निर्मित या निर्मित नहीं हैं। रेशम के धागे, विदेशी शराब, खिलौने, बिजली और इलेक्ट्रॉनिक सामान, सौंदर्य प्रसाधन, छतरी, चाय, कांच के बर्तन और क्रॉकरी, साबुन, चॉकलेट और कन्फेक्शनरी, रेडीमेड कपड़ों, मोटरसाइकिल और मोटर वाहनों का कोई मूल्य नहीं है।

धारा 4 जो कि प्रभार अनुभाग है, प्रदान करती हैः

" 4. विलासिता कर की घटना। - प्रत्येक स्टॉकिस्ट विलासिता के स्टॉक के अपने कारोबार पर ऐसी दर से विलासिता कर का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होगा, जो बीस प्रतिशत से अधिक न हो, जैसा कि राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा इस संबंध में निर्धारित कर सकती है और इसके लिए अलग-अलग दरें निर्धारित की जा सकती हैं।

विलासिता के विभिन्न वर्ग या वर्ग।

" स्टॉकिस्ट को धारा 2 (i) में इस प्रकार परिभाषित किया गया हैः

" स्टॉकिस्ट "से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसके पास, व्यापार के प्रथागत क्रम में, विलासिता का भंडार है या जिस पर उसका नियंत्रण है।

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

उनके द्वारा पश्चिम बंगाल में लाया गया, या तो अपने खाते पर या भंडारण के लिए पश्चिम बंगाल के बाहर किसी भी स्थान से अन्य लोगों का खाता,

पश्चिम बंगाल में ऐसी विलासिता की बिक्री, आपूर्ति या वितरण ";

अन्य प्रासंगिक परिभाषा धारा 2 (एच) में निहित है जो परिभाषित करती है।

विलासिता का अर्थ हैः

" विलासिता की मात्रा जो एक स्टॉकिस्ट प्राप्त करता है, या जिसके लिए खरीदता है,

उसका स्टॉक, या पश्चिम में उसकी लेखा पुस्तकों में रिकॉर्ड या खाते

भंडारण, विक्रय, आपूर्ति के लिए किसी भी निर्धारित अवधि के दौरान बंगाल

या किसी थोक विक्रेता, विक्रेता, खुदरा विक्रेता, वितरक या किसी अन्य को वितरित करना।

व्यक्ति, लेकिन इसके द्वारा आयोजित कोई मात्रा या ऐसी विलासिता शामिल नहीं होगी

ऐसी निर्धारित अवधि के पहले दिन स्टॉक में;

अधिनियम के तहत एक स्टॉकिस्ट द्वारा देय विलासिता कर के तहत लगाया जाना है

15 :

" विलासिता कर का शुल्क। - इसके तहत एक स्टॉकिस्ट द्वारा देय विलासिता कर

विलासिता के स्टॉक के उसके कारोबार के उस हिस्से पर अधिनियम लगाया जाएगा।

किसी भी निर्धारित अवधि के दौरान जो उसमें से कटौती करने के बाद बची रहती है

उस अवधि के दौरान उसका ऐसा कारोबार

(क) विलासिता के ऐसे भंडार का मूल्य जो संतुष्टि के लिए दिखाया गया है।

निर्धारित प्राधिकारी को स्थानों पर भेजा गया है

पश्चिम बंगाल के बाहर;

((ख) ऐसे वर्ग या वर्गों के विलासिता के भंडार का मूल्य या

जैसा कि निर्धारित किया जाए "।

स्टॉक या विलासिता के मूल्य को धारा 2 (एम) में इस प्रकार परिभाषित किया गया है

5 :

" विलासिता के भंडार का मूल्य।

(i) किसी भी स्टॉकिस्ट के संबंध में, जो इनमें से किसी का निर्माता है।

उसकी रसीद या प्रविष्टि के समय कारखाने का मूल्य स्टॉक, और;

((ii) किसी भी स्टॉकिस्ट के संबंध में, जो इनमें से किसी का आयातक है।

विलासिता, कीमत पर गणना की गई ऐसी विलासिताओं का मूल्य

प्रेषक के बिल, चालान या खेप नोट 752 के अनुसार

या समान प्रकृति का अन्य दस्तावेज।

और इसमें शामिल होंगे -

(क) उत्पाद शुल्क और केंद्रीय बिक्री कर, यदि कोई हो, ऐसे पर भुगतान या देय।

निर्माता या आयातक द्वारा विलासिता, जैसा भी मामला हो

हो सकता है और

(बी) परिवहन शुल्क और बीमा शुल्क, यदि कोई हो, ऐसे परिवहन के लिए

किसी भी परिसर, गोदाम, गोदाम या किसी अन्य स्थान पर विलासिता

थोक विक्रेता, विक्रेता, खुदरा विक्रेता, वितरक या किसी अन्य को वितरण के लिए

अन्य व्यक्ति;

शेष धाराएँ हमारे निर्णय के उद्देश्यों के लिए सामग्री नहीं हैं।

इन अपीलों में।

डब्ल्यू. बी. अधिनियम को पश्चिम बंगाल कराधान न्यायाधिकरण के समक्ष चुनौती दी गई थी

अन्य बातों के साथ-साथ इस आधार पर कि यह सूची I की प्रविष्टियों 83 और 84 के तहत विशेष रूप से संसद के लिए आरक्षित क्षेत्रों में अतिक्रमण करता है और विधायी रूप से अक्षम था,

कि यह कला का उल्लंघन करता है। 301 संविधान और याचिकाकर्ताओं द्वारा इलाहाबाद और आंध्र प्रदेश के उच्च न्यायालयों के समक्ष उठाए गए अन्य आधारों के समान। हालाँकि, आवेदकों ने स्वीकार किया कि अब्दुल कादिर (ऊपर) में इस अदालत के फैसले को देखते हुए, सिगरेट को सूची II की प्रविष्टि 62 के तहत "विलासिता" के रूप में माना जा सकता है। अधिनियम के लिए आवेदकों की चुनौती थी 2 के बहुमत से नकारात्मकः 1 20 दिसंबर, 1995 को। न्यायाधिकरण के फैसले से दो मामलों में विशेष अनुमति याचिकाएं दायर की गईं। अनुमति दी गई और इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले से उत्पन्न लंबित अपीलों और रिट याचिकाओं के साथ मामलों को जोड़ा गया। कोई ठहराव नहीं दिया गया। एक आवेदक ने अनुच्छेद के तहत कलकत्ता उच्च न्यायालय के समक्ष न्यायाधिकरण के फैसले को चुनौती दी। 226 संविधान से। उच्च न्यायालय ने 29 सितंबर, 2000 के अपने फैसले में रिट याचिका को खारिज कर दिया और अधिनियम की वैधता को बरकरार रखा। उच्च न्यायालय के निर्णय पर भी हमारे समक्ष आपत्ति है और इसे 2000 की सिविल अपील संख्या 6365 के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

श्री हरीश साल्वे के अनुसार, कुछ निर्धारिती की ओर से पेश होते हुए,

"विलासिता" शब्द का अर्थ वस्तुओं और विलासिता के संबंध में कानून बनाने की राज्य की शक्ति के रूप में नहीं लिया जा सकता है।

संविधान की सातवीं अनुसूची किसी भी वस्तु की बिक्री, निर्माण या आयात पर कर लगाने के लिए विस्तारित नहीं थी। यह प्रस्तुत किया जाता है कि वस्तुओं पर कर

इसका अर्थ माल के किसी पहलू पर कर लगाना होगा जो उसके निर्माण से शुरू होकर उसके उपभोग के साथ समाप्त होता है। 753 में विधायी सूचियों में वस्तुओं के प्रत्येक पहलू पर कर का विशेष रूप से प्रावधान किया गया था।

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

सूची I की प्रविष्टियाँ 92-ए और 92-बी और सूची II की प्रविष्टियाँ 54 और वस्तुओं के आयात और निर्यात पर शुल्क सूची 1 की प्रविष्टि 83 के लिए संदर्भित थे। इनमें से प्रत्येक में उन मामलों में कर की उच्च दरें ली जाती थीं या शुल्क लगाया जाता था जब विचाराधीन वस्तुएं उच्च मूल्य की होती थीं। श्री साल्वे के अनुसार यदि 'विलासिता' शब्द

प्रविष्टि 62 में वस्तुओं को शामिल करने का अर्थ लगाया गया था, फिर यह राज्य को केवल वस्तुओं को विलासिता के रूप में वर्णित करके इन सभी कई पहलुओं पर कानून बनाने की अनुमति देगा। इसी तरह अगर 'विलासिता' शब्द को वस्तुओं के वर्णनात्मक के रूप में समझा जाए तो इसका मतलब यह होगा कि प्रवेश से राज्य को सभी वस्तुओं पर कर लगाने की प्रबल शक्ति मिलेगी और इसके वितरण की योजना में बाधा आएगी।

संविधान के तहत परिकल्पित कराधान और राजस्व संग्रह पर शक्ति। यह प्रस्तुत किया जाता है कि कराधान के क्षेत्रों में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। कराधान के विषय पर एक अतिशयोक्ति हो सकती है लेकिन कर योग्य घटना अलग होनी चाहिए। यह तर्क दिया जाता है कि विलासिता की वस्तुओं पर एक विलासिता कर इस परीक्षण में विफल हो जाएगा जब तक कि कर योग्य घटना प्रदान करने का अमूर्त कार्य न हो।

विलासिता। इसलिए, श्री साल्वे का तर्क है कि सूची II की प्रविष्टि 62 में उपयोग किए गए 'विलासिता' शब्द का उपयोग एक गतिविधि या सेवा के अर्थ में किया गया है, अर्थात् विलासिता प्रदान करना और उस प्रविष्टि के तहत राज्य द्वारा जिस पर कर लगाया जा सकता है वह ऐसी सेवा होगी, लेकिन माल पर नहीं। उत्तर प्रदेश और उत्तर प्रदेश दोनों अधिनियमों को इस आधार पर चुनौती दी गई है कि दोनों अधिनियमों के तहत लगाया गया विलासिता कर वास्तव में तंबाकू की बिक्री पर कर था जो राज्यों की विधायी शक्तियों से परे था और संविधान के अनुच्छेद 286 और 301 का भी उल्लंघन था। श्री साल्वे ने आगे कहा कि यू. पी. और ए. पी. विलासिता कर अधिनियम संविधान के साथ धोखाधड़ी थी और अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (विशेष महत्व के सामान) अधिनियम, 1957 (जिसे इसके बाद ए. डी. ई. अधिनियम के रूप में संदर्भित किया गया है) के संचालन से बचने का एक उपकरण था, जिसके तहत एक राज्य सरकार जो निर्दिष्ट वस्तुओं पर बिक्री या खरीद कर लगाती है। तम्बाकू सहित 1957 के ए. डी. ई. अधिनियम के तहत लगाए गए अतिरिक्त उत्पाद शुल्क की आय में अपने हिस्से से वंचित किया जाना है। यह कहा गया है कि यू. पी. और ए. पी. दोनों राज्यों ने 1957 के ए. डी. ई. अधिनियम के अधिनियमन का पूरा लाभ उठाते हुए और उसके तहत लाभ उठाते हुए इस तरह के लाभ को जारी रखने के लिए विलासिता कर की आड़ में बिक्री कर लगाने की मांग की थी।

श्री के. के. वेणुगोपाल ने भी निर्धारिती की ओर से प्रस्तुत किया कि

प्रविष्टि 62 सूची II की भाषा में "मनोरंजन आदि सहित विलासिता पर कर" पढ़ा गया है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि "सम्मिलित" शब्द की व्याख्या, संदर्भ में, उदाहरणात्मक के रूप में की जानी चाहिए। इसलिए, एक समाज के सिद्धांत पर, "विलासिता" का अर्थ मनोरंजन की प्रकृति में कुछ होना चाहिए, [2005] 1 एस. सी. आर.

मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ। तर्क यह भी है कि सूची II की प्रविष्टि 62 में दो वाक्यांशों का उपयोग किया गया है, अर्थात् 'विलासिता पर कर' और 'मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ पर कर'। अतः दो प्रकार के कर हैं।

प्रविष्टि के तहत परिकल्पित। इन दो प्रकार के करों को एक साथ जोड़ने से यह संकेत मिलता है कि यह लगाए जाने वाले करों की प्रकृति में एक सामान्य तत्व के कारण किया गया था, लिंक यह है कि दोनों एक प्रकार की गतिविधि को संदर्भित करते हैं। श्री वेणुगोपाल ने यह भी प्रस्तुत किया कि पश्चिम बंगाल विलासिता कर अधिनियम के तहत लगाया जाने वाला कर कुछ अनुप्रयोगों में वास्तव में उत्पाद शुल्क था क्योंकि इसमें निर्मित वस्तुओं पर कर लगाने की मांग की गई थी।

भारत में, यह वास्तव में वस्तुओं के आयात पर एक कर था क्योंकि यह भारत के बाहर निर्मित वस्तुओं पर कर लगाने की मांग करता था और राज्य में लाया जाता था और यह एक बिक्री कर था क्योंकि यह वस्तुओं के प्रेषण पर कर लगाने की मांग करता था। केवल यह तथ्य कि अंतरराज्यीय बिक्री के संबंध में धनवापसी का प्रावधान है, श्री वेणुगोपाल के अनुसार, धोखे के चरित्र को नहीं बदलता है।

श्री आर. नरीमन ने भी कर निर्धारकों का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा कि राज्य

अधिनियम कला का उल्लंघन करते हैं। 301 संविधान से। श्री नरीमन द्वारा प्रस्तुत किया गया है कि भारत के पूरे क्षेत्र में मुक्त व्यापार, वाणिज्य और संभोग के अधिकार का एकमात्र अपवाद अनुच्छेद 301 के तहत उन वस्तुओं से संबंधित है जो अतिरिक्त वाणिज्यिक थीं। यह अपवाद तंबाकू पर लागू नहीं होता था। पंजाब राज्य बनाम में निर्णय। एम/एस। देवांस मॉडर्न ब्रुअरीज, (2003) 10 स्केल 202, जिसमें कहा गया था कि शराब अतिरिक्त वाणिज्यिक है, को इस आधार पर अलग करने की मांग की गई थी कि तंबाकू,

शराब के विपरीत, यह किसी भी विशेषाधिकार का विषय नहीं था, बल्कि सामान्य व्यापार या वाणिज्य का विषय था। यह प्रस्तुत किया जाता है कि संसद द्वारा यह मान्यता दी गई थी कि तंबाकू का व्यापार राष्ट्रीय महत्व का था, और केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम 1956 की धारा 14 के साथ पठित अनुच्छेद 286 (3) के तहत अंतरराज्यीय व्यापार और वाणिज्य में राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया गया था। रिलायंस को गोडावत पान मामले में इस अदालत के हालिया फैसले पर रखा गया था

मसाला उत्पाद v. भारत संघ, (2004) 6 स्केल पेज 388, जिसमें यह अभिनिर्धारित किया गया है कि तंबाकू अतिरिक्त व्यापार नहीं है। आगे तर्क यह है कि अनुच्छेद 301 और 286 देश की आर्थिक एकता को बनाए रखने के लिए एक आम संवैधानिक योजना का हिस्सा हैं और यह कि हालांकि अनुच्छेद 286 बिक्री तक सीमित था, लेकिन फिर भी चूंकि तंबाकू के संबंध में उस अनुच्छेद के तहत एक घोषणा की गई थी, इसका मतलब था कि केंद्रीय बिक्री की धारा 15 के तहत प्रदान की गई बाहरी सीमा से अधिक वस्तु पर कोई भी कर लगाया जाना।

कर अधिनियम वास्तव में अनुच्छेद 301 का उल्लंघन होगा। श्री नरीमन के अनुसार, कोई भी कर जिसके परिणामस्वरूप किसी घोषित वस्तु, जैसे कि तंबाकू, पर किसी विशेष राज्य में अधिक कर लगाया जाएगा, अनुच्छेद 301 का उल्लंघन करता है क्योंकि इससे क्षेत्रीय आर्थिक असंतुलन पैदा होगा।

इस तरह के राज्य कानून को मान्य करने का एकमात्र तरीका अनुच्छेद 304 (बी) के माध्यम से होगा। यह एक स्वीकृत स्थिति है कि किसी भी राज्य अधिनियम को संविधान के अनुच्छेद 304 के तहत राष्ट्रपति की मंजूरी नहीं मिली है।

भारत संघ का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री एम. परासरन ने इसका समर्थन किया

कर निर्धारकों की दलीलें और प्रस्तुत किया है कि यू. पी., ए. पी. और डब्ल्यू. बी. में विलासिता कर वास्तव में तंबाकू की बिक्री और खरीद पर एक कर था और कर का उद्ग्रहण करों के संग्रह और वितरण की योजना के विपरीत था जिसके तहत अकेले केंद्र विशेष महत्व की घोषित वस्तुओं पर कर लगा सकता है।

उत्तर प्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री एस. गुप्ता ने प्रस्तुत किया है कि

अब्दुल कादिर (ऊपर) में 'विलासिता' शब्द को आधिकारिक रूप से परिभाषित किया गया है, "कुछ ऐसा जो जीवन की आवश्यकताओं के अलावा आनंद का संचालन करता है। यह कुछ ऐसी चीज़ को दर्शाता है जो अनावश्यक है और अपरिहार्य नहीं है और जिसे हम आनंद लेने, मनोरंजन करने या मनोरंजन करने के उद्देश्य से लेते हैं। यह प्रस्तुत किया जाता है कि इस परिभाषा को दरकिनार नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह कई दशकों से इस क्षेत्र में है। श्री गुप्ता के अनुसार, विलासिता कर का उद्देश्य विलासिता की घटना या घटना है जिसका स्वयं अर्थ है, "विलासिता की घटना।

भोग, फिजूलखर्ची, आनंद, आराम, इन्द्रियों की संतुष्टि आदि। यह प्रस्तुत किया जाता है कि 'विलासिता' शब्द वस्तुओं और सेवाओं दोनों पर लागू होता था और यह एक्सप्रेस होटल्स बनाम में स्पष्ट रूप से माना गया है। गुजरात राज्य, [1989] 3 एससीसी 677। ऐसा कहा जाता है कि विलासिता कर एक अप्रत्यक्ष कर है और अंततः उससे एकत्र किया जाता है और इसका बोझ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उन उपभोक्ताओं पर पड़ता है जो विलासिता का आनंद लेते हैं। सूची II की प्रविष्टि 62 में 'सम्मिलित' शब्द के उपयोग के संबंध में तर्क का जवाब देते हुए, यह प्रस्तुत किया जाता है कि विलासिता पर कर को लंबे समय से एक अलग और विशिष्ट प्रकार के कर के रूप में मान्यता दी गई है और गैर-सामाजिक समाज का सिद्धांत लागू नहीं होगा। जहां तक यू. पी. अधिनियम की कल्पना की गई है, यह प्रस्तुत किया जाता है कि यह तंबाकू और ऐसे अन्य उत्पादों तक ही सीमित था। ऐसा कहा जाता है कि तंबाकू स्वाभाविक रूप से इस अर्थ में विलासितापूर्ण था कि इसे किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक नहीं कहा जा सकता था। दूसरी ओर, इसे स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव के रूप में पहचाना गया। कहा जाता है कि ऐसा नहीं है

बिक्री पर लेकिन वस्तु, तंबाकू और तंबाकू से बनी वस्तुओं पर एक कर जो दोनों इस अर्थ में विलासिता को जन्म देते हैं कि वे आनंद और आनंद के लिए लिए जाते हैं और मानव स्वास्थ्य और निर्वाह के लिए पूरी तरह से अनावश्यक हैं। यह. ऐसा कहा जाता है कि विलासिता 'पहलू' या 'घटक' जो वस्तु तंबाकू के कारण उत्पन्न होता है और तंबाकू की आपूर्ति की गतिविधि अपने आप में अनुच्छेद 246 (3) के तहत एक 'मामला' है जो 'तंबाकू' के अन्य पहलुओं जैसे कि इसके निर्माण, बिक्री आदि से अलग और स्वतंत्र था। ऐसा कहा जाता है कि यू. पी. अधिनियम तंबाकू की आपूर्ति की पूरी श्रृंखला को लक्षित करता है और 756 बनाने का लक्ष्य रखता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2

005] एस सी आर।

इसकी उपस्थिति राज्य में सबसे पहले तम्बाकू उत्पादकों द्वारा आपूर्ति के बिंदु पर महसूस की गई। राज्य के पहले तम्बाकू व्यापारी का भी मात्र तथ्य -

तंबाकू की आपूर्ति के अपने कार्य द्वारा तंबाकू के सेवन के कार्य को सुविधाजनक बनाना, अर्थात ऐसी स्थिति लाना जिसमें विलासिता के कार्य और तत्व की क्षमता हो, अर्थात् तंबाकू के सेवन का कार्य है -

कराधान के प्रयोजनों के लिए विलासिता के तत्व का मूल्य निर्धारित करना। अधिनियम के आरोप अनुभाग में "या अन्यथा" वाक्यांश के उपयोग से भी इसका समर्थन किया गया था। यह प्रस्तुत किया जाता है कि यह अनुच्छेद 366 (29 ए) (एफ) के अर्थ के भीतर माल की बिक्री पर कर नहीं है और न ही आपूर्ति पर कर है। यह हमारा ध्यान आकर्षित करता है कि वस्तुओं की बिक्री की परिभाषा का विस्तार करने वाले अनुच्छेद 366 (29 ए) (एफ) में संशोधन विलासिता को शामिल करने के बाद हुआ। राज्यों द्वारा कानून के एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में कर। इसलिए, प्रविष्टि 62 सूची II के तहत राज्यों द्वारा पहले से विलासिता के रूप में जो कर योग्य था, वही बना रहा।

अनुच्छेद 366 (29 ए) में संशोधन के बाद भी कर योग्य। इस प्रकार यूपी अधिनियम जो सूची II की प्रविष्टि 62 के विधायी मापदंडों के भीतर बनाया गया था, वह 'आपूर्ति' पहलू पर कर नहीं था। इसके बाद यह होगा कि यदि राज्य द्वारा लगाया गया कर वास्तविक बिक्री या मानित बिक्री नहीं था, तो अनुच्छेद 286 के उल्लंघन का कोई सवाल ही नहीं था और न ही इस अधिनियम के एडीई अधिनियम के परिणाम से बचने के लिए एक उपकरण होने का कोई सवाल ही था।

पश्चिम बंगाल राज्य का प्रतिनिधित्व श्री आर. द्विवेदी ने किया था। वह.

सूची की प्रविष्टि 62 के दायरे पर उत्तर प्रदेश सरकार के रुख का समर्थन किया

II और कहा है कि 'विलासिता' शब्द का अर्थ न केवल सेवाओं बल्कि वस्तुओं को भी शामिल करने के लिए किया जाना चाहिए। श्री द्विवेदी के अनुसार, भारत सरकार अधिनियम, 1919 से शुरू होने वाले प्रवेश के विधायी इतिहास से पता चलता है कि सट्टेबाजी, जुआ, मनोरंजन और विलासिता कर को अलग माना गया था।

और अलग-अलग आइटम। हमें कर नियम, 1920 की अनुसूची I और विशेष रूप से प्रविष्टि 6 के लिए संदर्भित किया गया था जो विलासिता कर से संबंधित था और 1924-25 के टैरिफ आयोग की रिपोर्ट का विषय था। इस संबंध में तंबाकू पर कर लगाने के सवाल पर विचार किया गया था।

प्रवेश। इन सभी प्रविष्टियों को उस अधिनियम की सूची II की प्रविष्टि 52 में भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत एक साथ जोड़ा गया था। ऐसा कहा जाता है कि इस न्यायालय ने बार-बार "इक्सरी" शब्द का अर्थ निकाला था। 1959 में, पश्चिमी भारत थिएटर बनाम में निर्णय। छावनी बोर्ड, ए. आई. आर. (1959) एस. सी. 582,585 इस न्यायालय ने

उन्होंने कहा कि "विलासिता" शब्द का सामान्य अर्थ दिया जाना था। 1976 में अब्दुल कादिर में निर्णय इस आधार पर भी आगे बढ़ा कि प्रविष्टि 62 सूची-II में 'विलासिता' शब्द वस्तुओं को संदर्भित करता है। आखिरकार, 1989 में एक्सप्रेस 757

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। » . यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

होटलों ने प्रवेश का अर्थ यह माना था कि 'विलासिता' शब्द में भौतिक और अवास्तविक दोनों तरह की वस्तुओं और सेवाओं को शामिल किया गया था। यह प्रस्तुत किया जाता है कि इस न्यायालय को एक अच्छी तरह से स्थापित श्रृंखला से विचलित होने का कोई कारण नहीं था

जिन उदाहरणों ने पांच दशकों से अधिक समय तक इस क्षेत्र को संभाला था। यह भी प्रस्तुत किया जाता है कि प्रविष्टि में 'समावेशन' शब्द एक विस्तार का संकेत देता है और यह दृष्टांतात्मक नहीं था और न तो समाज को कम करने के सिद्धांत और न ही प्रविष्टि 62 के तहत कर के उद्देश्यों को समझने में प्रचुरता का उपयोग किया जा सकता है। के रूप में

जहाँ तक तंबाकू का संबंध है, यह प्रस्तुत किया जाता है कि इस बात पर कभी विवाद नहीं हुआ है कि यह विलासिता की वस्तु है। यह आगे तर्क दिया जाता है कि सूची II में कई प्रविष्टियों के संदर्भ में, जो सूची I या सूची III में प्रविष्टियों के अधीन हैं, कि हालांकि कराधान के किसी विशेष विषय के कुछ पहलुओं को सूची II से निकाला जा सकता है, फिर भी उस विषय के संबंध में कर लगाने की शक्ति सूची II के तहत राज्य सरकारों के पास बनी रही। सूची II की प्रविष्टियाँ, 26,27,50,53 और 60 का संदर्भ दिया गया है। श्री द्विवेदी के अनुसार, संवैधानिक योजना ने दिखाया कि कुछ पहलुओं के संबंध में

वही विषय वस्तु सूची II में आएगी जबकि अन्य पहलू सूची I या सूची III में से किसी एक में आएंगे। आगे प्रस्तुतिकरण यह है कि विलासिता कर सीधे वस्तुओं पर एक कर है जबकि सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और बिक्री कर वस्तुओं के संबंध में हैं। इस प्रकार उत्पाद शुल्क वस्तुओं के निर्माण या उत्पादन पर एक शुल्क है, लेकिन यह सीधे माल पर कर नहीं था। यह तर्क दिया जाता है कि इस तथ्य का कि कर विलासिता वस्तुओं पर माल के निर्माण या बिक्री के संदर्भ में लगाया गया था, इसका मतलब यह नहीं होगा कि यह माल के निर्माण या बिक्री पर कर था। निर्माण या बिक्री केवल लागू विलासिता कर के उपाय हैं। पश्चिम बंगाल अधिनियम के विशेष संदर्भ में, यह प्रस्तुत किया गया था कि कर विलासिता वस्तुओं या वस्तुओं पर था, हालांकि यह भंडारित या आयातित वस्तुओं के मूल्य के संदर्भ में था। कर केवल है

जब वस्तु का भंडारण किया जाता है तो उस पर शुल्क लगाया जाता है। निर्धारिती के इस तर्क के जवाब में कि उत्पाद शुल्क, बिक्री कर, सीमा शुल्क आदि सभी विलासिता वस्तुओं के संबंध में उच्च दरों का प्रावधान करते हैं, यह इस तथ्य से अलग नहीं है कि वे कर वस्तुओं के संबंध में गतिविधियों पर कर बने रहे और नहीं थे।

माल पर स्वयं कर।

श्री गोपाल सुब्रमण्यम आंध्र प्रदेश राज्य की ओर से पेश हुए हैं

प्रस्तुत किया कि सूची II की प्रविष्टि 62 का अर्थ इस बात को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए कि प्रविष्टि में कोई प्रतिबंधात्मक शब्द नहीं थे और न ही कोई प्रतिबंधात्मक शब्द थे।

किसी भी अन्य प्रविष्टि में सामग्री जो प्रविष्टि 62 को संशोधित या प्रभावित करेगी। यह प्रस्तुत किया जाता है कि संविधान में कहीं और उपयोग किए गए 'उपभोग' शब्द का उपयोग प्रविष्टि में नहीं किया गया था। यह इंगित करता है कि प्रवेश सीमित नहीं था विलासिता, मनोरंजन आदि के 'उपभोग' पहलू के लिए।

ऐसा कहा जाता है कि प्रविष्टि 62 को प्रविष्टि 54 के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से पढ़ा जा सकता है और प्रविष्टि 54 कुल मिलाकर 758 है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

प्रविष्टि और वह प्रविष्टि 62 ऐसे एकत्रीकरण के एक तत्व/घटक से संबंधित है। श्री सुब्रमण्यम के अनुसार प्रविष्टि 62 का सार विलासिता है।

विलासिता का रूप या तो वस्तुओं या सेवाओं के रूप में महत्वहीन है। अंत में यह प्रस्तुत किया जाता है कि तंबाकू पूरी तरह से प्रविष्टि 62 के अंतर्गत आता है। यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि एक उपभोक्ता की वास्तविक उपस्थिति विलासिता कर की अवधारणा के लिए अनिवार्य है। यह भी प्रस्तुत किया जाता है कि संविधान में इस संबंध में कानून बनाने का प्रावधान है

आनंद और संतुष्टि। विलासिता के दो पहलू हैं, पहला ऐसी वस्तुएं और सेवाएं जो विलासिता की भावना को बढ़ावा देने में आंतरिक रूप से सक्षम हैं और दूसरा, ऐसी वस्तुओं या सेवाओं का प्राप्तकर्ता जो इस तरह की संतुष्टि का उपभोग या अनुभव करता है। तर्क यह है कि 'विलासिता' को बढ़ावा देने की क्षमता, जो प्रविष्टि 62 के भीतर वस्तुओं को 'विलासिता' के रूप में लेबल करती है, वस्तुओं पर कर लगाने के लिए हकदार वस्तुओं का एक पहलू है और यह प्रविष्टि 62 से संबंधित है। कौन सा पहलू निर्माण या बिक्री पर करों से अलग है। चूँकि 'विलासिता' वस्तुएँ और सेवाएँ दोनों हो सकती हैं, इसलिए जो प्रासंगिक है वह वस्तुओं और सेवाओं के विलासिता तत्व/क्षमता का सामान्य भाजक है। श्री सुब्रमण्यम के अनुसार चूंकि प्रविष्टि 62 के तहत कर विलासिता पर है, इसलिए इसे वैध रूप से लगाया जा सकता है, यहां तक कि जहां विलासिता की वास्तविक खपत नहीं है।

विलासिता। आंध्र प्रदेश अधिनियम पर आते हुए, यह प्रस्तुत किया जाता है कि अधिनियम का प्राथमिक उद्देश्य तंबाकू पर कर लगाना था न कि बिक्री या बिक्री पर। इसका निर्माण। अनुच्छेद 301 पर, यह प्रस्तुत किया गया है कि यह शुल्क तंबाकू की आवाजाही या अंतरराज्यीय रूप से तंबाकू के व्यापार को प्रभावित नहीं करता है

लेन-देन को छूट दी गई थी।

इस पृष्ठभूमि में, के अर्थ के रूप में प्रतिस्पर्धी विवाद

सूची II की प्रविष्टि 62 में "विलासिता" शब्द पर विचार किया गया हैः

(क) निर्धारिती के विद्वान वकील के अनुसार शब्द

' विलासिता 'विलासिता की वस्तु से अलग है और इस उद्देश्य के लिए है।

सूची II की प्रविष्टि 62 का अर्थ है भोग, आराम की गतिविधि, आनंद लेते हैं।

(ख) यू. पी. और ए. पी. राज्य के विद्वान वकील का तर्क।

'विलासिता' का अर्थ कुछ हद तक अस्पष्ट है। जिस पर

एक तरफ यह तर्क दिया गया था कि 'विलासिता' एक घटक है और माल का पहलू और वह प्रविष्टि 62 अनन्य से संबंधित है

ऐसे घटक या पहलू 759 पर कर लगाने के लिए राज्य की अधिकारिता

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड, v. यू. पी. राज्य [रूमा पाल। जे.]

कुछ प्रकार की वस्तुओं के उपयोग या उपभोग से उत्पन्न होता है या सेवाएँ या कुछ प्रकार की गतिविधियों में संलिप्तता जो हैं

प्रकृति में शानदार।

(ग) पश्चिम बंगाल राज्य के वकील के अनुसार, 'विलासिता'

उन वस्तुओं और सेवाओं दोनों को समझता है जिनका एक तत्व है

आनंद, फिजूलखर्ची और जो आवश्यक नहीं हैं। इसलिए,

राज्य उन वस्तुओं पर कर लगा सकता है जो अपने आप में विलासिता की वस्तुएँ हैं।

पूर्ण अर्थ जैसे तंबाकू, शराब, आभूषण आदि या अन्य सामान

पर्याप्त रूप से उच्च मूल्य सीमा लागू करके, पर्याप्तता मध्यम वर्ग के मानकों के अनुसार निर्धारित "।

विलासिता शब्द संभवतः तीनों अर्थों के लिए अतिसंवेदनशील हो सकता है।

ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार (2nd Edn; वॉल्यूम। IX) 'विलासिता'

अन्य अर्थों के बीच इसे इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है (1) प्रचुरता, भव्य आनंद (2) आदतन उपयोग, या जो विकल्प या महंगा है उसमें लिप्त होना (3) परिष्कृत और गहन आनंद; विलासितापूर्ण आनंद का साधन; (4) एक विशिष्ट अर्थ में: कुछ ऐसा जो आवश्यकता के अलावा आनंद या आराम का कारण बनता है। इसलिए, हाल के उपयोग में, कुछ ऐसा जो वांछनीय है लेकिन अपरिहार्य नहीं है और (5) विलासिता के रूप में एक विशेषता के रूप में

कोच, क्रूज शुल्क, संस्करण, फ्लैट, लाइनर, दुकान, कर, व्यापार "।

उच्च न्यायालयों और पश्चिम बंगाल कराधान न्यायाधिकरण ने इसे स्वीकार कर लिया है

असंवैधानिक के रूप में नीचे। अमान्य नियमों में तंबाकू के भंडारण और बिक्री के लिए और तंबाकू में लाइसेंस शुल्क के भुगतान के लिए लाइसेंस लेने की आवश्यकता थी। उसका सम्मान करें। इस न्यायालय ने ए. बी. अब्दुल कादिर बनाम. भारत संघ, [1962] 2 एस. सी. आर. 741 ने माना कि नियम केंद्रीय उत्पाद शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 के प्रावधानों के अनुरूप कानून थे और वित्त अधिनियम, 1950 द्वारा प्रतिस्थापित किए गए थे। नियमों के अमान्य होने के परिणामस्वरूप, पूर्ववर्ती लाइसेंसधारियों द्वारा एकत्र शुल्क की वापसी के लिए आवेदन दायर किए गए थे। तब राज्यों द्वारा इस अधिनियम को विलासिता कर के रूप में मान्य करने के लिए पारित किया गया था। अधिनियम को इस आधार पर चुनौती दी गई थी कि यह वास्तव में सूची I की प्रविष्टि 84 के तहत संघ की अनन्य शक्ति के लिए संदर्भित उत्पाद शुल्क था। इसे इस आधार पर नकार दिया गया था कि विवादित अधिनियम में कोई प्रावधान नहीं था जो तंबाकू के उत्पादन या निर्माण से संबंधित था। अगला तर्क था कि 760

तम्बाकू विलासिता की वस्तु नहीं थी। इस तर्क को नकार दिया गया। इसमें था।

उस संदर्भ में कि इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि अधिनियम सूची II की प्रविष्टि 62 के लिए संदर्भित था और कहाः

" उस प्रविष्टि के अनुसार, राज्य विधानसभाएँ कानून बना सकती हैं।

मनोरंजन पर करों सहित विलासिता पर करों का सम्मान,

मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ "। अतः यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि

क्या तंबाकू को विलासिता की वस्तु माना जा सकता है। द.

उपरोक्त संदर्भ में 'विलासिता' शब्द का उपयोग इस अर्थ में नहीं किया गया है कि

कुछ अमीरों के अनन्य संरक्षण से संबंधित है। तथ्य यह है कि एक लेख का उपयोग गरीब वर्गों के बीच लोकप्रिय है

विलासिता का एक लेख। 'विलासिता' शब्द का अर्थ कुछ ऐसा है जो जीवन की आवश्यकताओं से ऊपर आनंद का संचालन करता है। यह.

कुछ ऐसा दर्शाता है जो अनावश्यक है और अपरिहार्य नहीं है और

जिसे हम आनंद लेने, मनोरंजन करने या मनोरंजन करने के उद्देश्य से लेते हैं। ” (पी।

227)

ऐसा प्रतीत होता है कि "विलासिता पर कर" वाक्यांश में

सूची II की प्रविष्टि 62 का अर्थ था विलासिता की वस्तुओं पर कर और एकमात्र सवाल यह था कि क्या तंबाकू ऐसी वस्तु थी। वर्तमान मामले में निर्धारिती इस बात पर विवाद न करें कि तंबाकू विलासिता की वस्तु है, लेकिन तर्क दें कि विलासिता की वस्तुएं प्रविष्टि 62 के दायरे में नहीं आती हैं। यह एक ऐसा तर्क था जिसे अब्दुल कादिर में न तो उठाया गया और न ही उस पर विचार किया गया।

सूची II की प्रविष्टि 62 में "विलासिता" की अवधारणा पर भी विचार किया गया था।

होटल और रेस्तरां संघ बनाम। भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 634। उस मामले में होटल उद्योग ने व्यय कर अधिनियम 1987 (1987 का केंद्रीय अधिनियम 35) की संवैधानिक वैधता को चुनौती दी थी। भारत संघ ने सातवीं अनुसूची की सूची I की प्रविष्टि 97 के साथ पठित अनुच्छेद 248 के तहत विवादित कानून को लागू करने के लिए विधायी क्षमता को बनाए रखने की मांग की। होटल व्यवसायियों ने

आग्रह किया कि कानून पूरी तरह से सूची II की प्रविष्टि 62 के भीतर था क्योंकि इसने 'विलासिता' पर कर लगाया था। होटल व्यवसायियों के वकील ने इस आधार पर तर्क दिया कि विलासिता पर कर माल की बिक्री के लिए भुगतान की गई कीमत पर कर था (रिपोर्ट के पैरा 29 के अनुसार)। इस न्यायालय ने अधिनियम की चुनौती को खारिज कर दिया और इसे यह कहते हुए बरकरार रखा कि विवादित अधिनियम की विषय वस्तु खर्च पर कर थी न कि विलासिता या वस्तुओं की बिक्री पर।

प्रविष्टि 62 में 'विलासिता पर कर' शब्दों पर एक और निर्णय मामला है।

एक्सप्रेस होटल्स बनाम। गुजरात राज्य, [1989] 3 एससीसी 677। उस मामले में विभिन्न राज्यों के विधान, अर्थात् गुजरात, तमिलनाडु राज्य, 761

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

'विलासिता' पर कर लगाने वाले कर्नाटक और पश्चिम बंगाल को संवैधानिक रूप से अमान्य होने के रूप में चुनौती दी गई थी। विलासिता पर कर लगाने के लिए अधिनियमों का प्रावधान

होटलों में उपलब्ध कराया जाता है। उस मामले में अपीलार्थियों का तर्क था कि सूची II की प्रविष्टि 62 में कर प्रविष्टि में "विलासिता" पर करों का प्रावधान किया गया था और अपने व्यापक दायरे में वस्तुओं और आभूषण इत्र, शराब, तंबाकू आदि जैसी वस्तुओं पर कर को विलासिता की वस्तुओं के रूप में लिया गया था और

इसमें "सेवाएँ" या "गतिविधियाँ" शामिल नहीं थीं। तर्क को खारिज कर दिया गया और यह माना गया कि शुल्क वैध था।

इस मामले में भी तर्क इस आधार पर आगे बढ़े कि सूची की प्रविष्टि 62

II में विलासिता की वस्तुओं को शामिल किया गया। अतः इनमें से किसी भी निर्णय में इस न्यायालय से इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए नहीं कहा गया था कि क्या प्रविष्टि 62 में विलासिता की वस्तुओं को शामिल नहीं किया गया है और इसे आनंद या विकल्प या महंगे में लिप्त होने जैसी अमूर्त चीजों तक ही सीमित रखा जाना चाहिए।

ऐसा प्रतीत होता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में अदालतों द्वारा 'विलासिता' को परिभाषित किया गया है।

अमेरिका के रूप में "एक पूरी तरह से सापेक्ष शब्द; महंगे भोजन में एक मुफ्त भोग, पोशाक, फर्नीचर या कुछ भी महंगा जो भूख या स्वाद को संतुष्ट करता है; जीवन का एक तरीका भी है जिसकी विशेषता भौतिक प्रचुरता और जीवन की संतुष्टि है।

महंगे स्वाद '। (कॉर्पस ज्यूरिस सेकंडम खंड-IV पी। 887) . इस परिभाषा के अनुसार, ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकी न्यायालयों ने निर्धारिती द्वारा प्रस्तुत शब्द की परिभाषा को चुना है और यह माना है कि यह एक गतिविधि है। हालाँकि हमें राज्यों के वकील द्वारा अन्य राज्यों को भी भेजा गया है।

ब्लैक लॉ डिक्शनरी (छठा संस्करण) जैसे आधिकारिक कार्य जिसमें 'विलासिता कर' को उन वस्तुओं की खरीद पर लगाए गए उत्पाद शुल्क के लिए एक सामान्य शब्द कहा जाता है जो आवश्यक नहीं हैं जैसे शराब या सिगरेट पर कर। यह परिभाषा अनिर्णायक है क्योंकि यह केवल यह परिभाषित करती है कि वास्तव में किसी विशेष क़ानून में कर का विषय क्या हो सकता है।

लेकिन सैद्धांतिक रूप से 'विलासिता' कई में से प्रत्येक को शामिल करने में सक्षम है।

शब्द से संबंधित अर्थ। सवाल यह है कि संवैधानिक प्रविष्टि में इस शब्द का अर्थ कैसे लगाया जाए। न तो शब्दकोश का अर्थ और न ही शब्द से जुड़ा अर्थ (बताए गए कारणों के लिए) अस्पष्टता को हल करता है। समाधान प्रविष्टि की भाषा में पाया जाना चाहिए

अधिरोपण के संबंध में संवैधानिक योजना पर विचार करना

करों और राजस्व का संग्रह।

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, हम जमीन को साफ करना चाहेंगे। जो भी हो।

इस देश के समान संघीय संरचनाओं वाले अन्य देशों के संविधानों के बीच समानताएं हों जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा या ऑस्ट्रेलिया, इस न्यायालय ने एक सामान्य नियम के रूप में माना है कि राय 762 व्यक्त की गई है।

[2

005] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उन देशों के न्यायालयों द्वारा हमारे संविधान में विधायी प्रमुखों के आवंटन को समझने में सहायक नहीं हो सकता है। [छोटाभाई हेठाभाई पटेल बनाम देखें। भारत संघ, [1962] सप। 2 एस. सी. आर. 1; मद्रास प्रांत बनाम। एम/एस। बोड्डू पैदन्ना, (ऊपर); बॉम्बे राज्य बनाम। चमारबागवाला, [1957] एस. सी. आर. 874; अतिबाड़ी टी कंपनी. वी. असम राज्य, [1961] I एससीआर 809 और द ऑटोमोबाइल ट्रांसपोर्ट (राजस्थान) v. राजस्थान राज्य, [1963] 1 एस. सी. आर. 491] हालांकि वे विशेष विधान के वास्तविक चरित्र को निर्धारित करने में कुछ प्रासंगिक हो सकते हैं (सुब्रमण्यन चेट्टियार बनाम। मुथुस्वामी गौंडर,

(1940) एफ. सी. आर. 188 और भारत संघ बनाम एच. एस. ढिल्लन, [1971] 1 एस. सी. सी. 779,801 803)। व्याख्या के प्रश्न पर अधिकार के धन को देखते हुए

इस देश में विधायी प्रमुख, हम इसे अपनी राय को सीमित करने के लिए पर्याप्त मानते हैं

इस न्यायालय द्वारा व्यक्त किए गए विचारों के आधार पर।

भारतीय संविधान इस मायने में अद्वितीय है कि इसमें एक विस्तृत विवरण शामिल है।

केंद्र और राज्यों के बीच कराधान की विधायी शक्तियों की गणना और विभाजन। यह पारस्परिक विशिष्टता अनुच्छेद 246 (1) में परिलक्षित होती है और एच. एम. सीरवई के भारत के संवैधानिक कानून में इसका उल्लेख किया गया है। चौथा संस्करण, खंड 1 पैराग्राफ 1 ए 25 में पृष्ठ 166 पर जहां, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और अन्य देशों जैसे संघीय संरचनाओं के साथ अन्य देशों में प्रदान की गई कराधान की अतिव्यापी शक्तियों द्वारा उत्पन्न समस्याओं पर टिप्पणी करने के बाद।

ऑस्ट्रेलिया, विद्वान लेखक ने राय दीः

" जी. आई. अधिनियम, 35 की अनुसूची VII में निहित सूचियाँ प्रदान की गई हैं। कराधान के विशिष्ट और अलग क्षेत्रों के लिए और इसके बिना नहीं है

महत्व यह है कि समवर्ती विधायी सूची में संबंधित कोई प्रविष्टि नहीं है

कराधान के लिए लेकिन केवल निहित मामलों के संबंध में "शुल्क" के लिए प्रावधान करता है

सूची में लेकिन किसी भी अदालत में ली गई फीस शामिल नहीं है। सूची I और सूची

अनुसूची 7 का II इस प्रकार कराधान की अतिव्यापी शक्तियों से बचाता है और आगे बढ़ता है

संघ के लिए कराधान के पर्याप्त स्रोतों के आवंटन के आधार पर

और प्रांत, जिसके परिणामस्वरूप परस्पर विरोधी या कुछ समस्याएं हैं

जी. आई. अधिनियम के तहत प्रतिस्पर्धी कर लगाने की शक्तियां उत्पन्न हुई हैं, 35. यह

कराधान के संबंध में विधायी सूचियों की योजना को अपने हाथ में ले लिया गया है

समान लाभकारी परिणामों के साथ भारत के संविधान द्वारा "।

इस विचार को होक्स्ट फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड में भी दोहराया गया है।

एन. आर. वी. बिहार राज्य और अन्य। , [1983] 3 एससीआर 130:

" सातवीं अनुसूची की सूची I और II की जांच से पता चलेगा कि कर लगाने की शक्ति में कहीं भी कोई अतिव्यापी नहीं है और

संविधान संघ को कराधान के स्वतंत्र स्रोत देता है और

राज्यों को। भारत सरकार अधिनियम, 763 की योजना के अनुसार

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

1935 , संविधान ने संघ की कर लगाने की शक्ति बना दी है और

राज्यों का पारस्परिक रूप से अनन्य और इस प्रकार कठिनाइयों से बचना जो कुछ अन्य संघीय संविधानों में उत्पन्न हुए हैं

कराधान की अतिव्यापी शक्तियाँ। इस प्रकार, हमारे संविधान में एक संघर्ष है

संघ और राज्यों की कर लगाने की शक्ति उत्पन्न नहीं हो सकती।

(पश्चिम बंगाल राज्य बनाम भी देखें। केसोरम इंडस्ट्रीज लिमिटेड और

ओआरएस। , जे. टी. (2004) 1 375)।

इसलिए, कराधान प्रविष्टियों को स्पष्टता और सटीकता के साथ समझा जाना चाहिए।

ताकि इस तरह की विशिष्टता को बनाए रखा जा सके, और एक कर प्रविष्टि का निर्माण जो अतिव्यापी हो सकता है, को त्याग दिया जाना चाहिए। यदि कर लगाने की शक्ति किसी विशेष विधायी क्षेत्र के भीतर है तो यह अन्य क्षेत्रों का अनुसरण करेगा विधायी सूचियों को इस क्षेत्र को बाहर करने के लिए समझा जाना चाहिए ताकि कोई

विधायी अतिक्रमण की संभावना।

शास्त्रीय रूप से, एक कर को दो तत्वों से बना माना जाता हैः व्यक्ति को,

वस्तु या गतिविधि जिस पर कर लगाया जाता है और कर की घटना। इस प्रकार प्रत्येक कर किसी उद्देश्य या कराधान की घटना पर लगाया जा सकता है। भेद है।

दोनों के बीच, अंततः, भारतीय संविधान के संदर्भ में सामग्री नहीं हो सकती है जैसा कि हम बाद में पाएंगे। लेकिन कुछ समय के लिए हम इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि ये दोनों तत्व कराधान की घटनाओं से अलग हैं। उदाहरण के लिए वस्तुओं के निर्माण, बिक्री, आयात आदि की स्थिति पर कर लगाया जा सकता है। कर अधिरोपित करने वाला कानून किसी भी व्यक्ति पर कर का बोझ पड़ने की घटना या तरीके को भी निर्धारित कर सकता है और कर की राशि और माप को अपने भीतर ले लेगा। इस भेद का महत्व इस तथ्य में निहित है कि भारत में पहले दो को एक दिया गया है

संवैधानिक स्थिति, जबकि कर की घटना एक मामला होगा

वैधानिक विवरण। कर की घटना यह समझने में प्रासंगिक होगी कि कोई कर प्रत्यक्ष है या अप्रत्यक्ष। लेकिन कर की विषय वस्तु को निर्धारित करने में यह अप्रासंगिक होगा। [देखिएः एम/एस। छोटाभाई जेठाभाई पटेल एंड कंपनी बनाम भारत संघ और एएनआर। , आकाशवाणी (1962) एससी 1006]।

इस भेद का एक उदाहरण राज्य में अच्छी तरह से सामने लाया गया है

कर्नाटक बनाम. ड्राइव-इन-एंटरप्राइजेज, [2001] 4 एससीसी 60। मनोरंजन कर कर्नाटक सिनेमा (विनियम) अधिनियम, 1964 और एक फिल्म शो के संबंध में राज्य द्वारा बनाए गए नियमों द्वारा लगाया

गया था। उन व्यक्तियों पर कर की उच्च दर लगाई गई थी जो अपनी कारों से आराम से फिल्म देखने के लिए अपनी कार चलाते थे। अधिनियम के सामने चुनौती यह थी कि मनोरंजन कर केवल मनुष्यों पर लगाया जा सकता है न कि किसी निर्जीव वस्तु, अर्थात् मोटर वाहनों पर। चुनौती को इस आधार पर नकार दिया गया कि

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2

005] 1 एस सी आर।

राज्य प्रविष्टि 62 सूची II के तहत मनोरंजन पर कर लगाने के लिए सक्षम था। यही कर का विषय था। कर का प्रभाव मनोरंजन करने वाले व्यक्तियों पर था। स्पष्ट रूप से बोझ किस तरह गिरेगा। मोटर वाहनों के साथ या बिना व्यक्तियों पर या तो वस्तु या वस्तु को प्रभावित नहीं करेगा

कर की प्रकृति। मोटर वाहन न तो कराधान का उद्देश्य थे और न ही कर योग्य घटना लेकिन कर की घटना का हिस्सा थी।

भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची की तीन सूचियों के तहत

विधायी सूची में कराधान प्रविष्टि किसी उद्देश्य या उद्देश्य के संबंध में हो सकती है।

घटना या दोनों के संबंध में हो सकती है। अनुच्छेद 246 यह स्पष्ट करता है कि संसद या राज्यों को किसी विशेष मामले पर कानून बनाने के लिए प्रदत्त अनन्य शक्तियों में उस मामले के संबंध में कानून बनाने की शक्ति शामिल है। अतः जहाँ प्रविष्टि कर के किसी उद्देश्य का वर्णन करती है, वहाँ संबंधित सभी कर योग्य घटनाएँ उद्देश्य कानून के उस क्षेत्र के भीतर हैं जब तक कि घटना विशेष रूप से एक अलग विधायी शीर्ष के तहत कहीं और प्रदान नहीं की जाती है। जहां विधायी ओवरलैप की संभावना है, अदालतों ने विधायी सूचियों में प्रविष्टियों के निर्माण के तय किए गए सिद्धांतों के अनुसार मुद्दे का समाधान किया है।

इस तरह के तय किए गए सिद्धांतों में से पहला यह है कि विधायी प्रविष्टियां होनी चाहिए

उदारतापूर्वक व्याख्या की गई कि सूची में किसी भी वस्तु को संकीर्ण या प्रतिबंधित अर्थ में नहीं पढ़ा जाना चाहिए और प्रत्येक सामान्य शब्द को सहायक या सहायक मामलों तक विस्तारित किया जाना चाहिए जिन्हें इसमें निष्पक्ष और यथोचित रूप से समझा जा सकता है (संयुक्त प्रांत v. माउंट। अतीका बेगम, आकाशवाणी (1941) एफ. सी. 16, वेस्टर्न इंडिया थिएटर्स लिमिटेड। वी. छावनी बोर्ड पूना, [1959]

पूरक। 2 एस. सी. आर. 63,69 और ई. एल. ई. एल. होटल्स एंड इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड और अन्य। वी. भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 698)।

एक्सप्रेस होटल्स बनाम। गुजरात राज्य (ऊपर) यह नोट किया गया था कि दृष्टिकोण

बॉम्बे राज्य बनाम में बॉम्बे उच्च न्यायालय का। आर. एम. डी. चमरबागवाला, आकाशवाणी (1956) बॉम। मैं कहता हूँ कि प्रविष्टि 62 में जो विचार किया गया था वह था "कुछ वस्तुओं या वस्तुओं पर कर जो विलासिता का गठन करते हैं न कि कानून को नियंत्रित करने वाला।

एक गतिविधि जो एक आवश्यक गतिविधि नहीं हो सकती है, इस द्वारा खारिज कर दिया गया था बॉम्बे राज्य में न्यायालय बनाम। आरएमडी चमरबागवाला, [1957] एससीआर 874। द.

स्पेन्स होटल प्राइवेट लिमिटेड में कलकत्ता उच्च न्यायालय का दृश्य, v. पश्चिम बंगाल राज्य, (1975) कर एल. आर. 1890 (कैल) उस प्रभाव के लिए जिसके तहत ए कर लगाया जाता है।

प्रविष्टि 62 को केवल कुछ वस्तुओं तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता है, बल्कि इसे बढ़ाया भी जा सकता है।

अमूर्त चीजों की पुष्टि की गई थी, यह कहा गया थाः

" प्रविष्टि 62, सूची II में 'विलासिता' पर कर की अवधारणा नहीं हो सकती है

केवल उन कर वस्तुओं तक सीमित जो उनके रूप में मूर्त और भौतिक हैं ' विलासिता '। यह सच है कि जबकि मितव्ययी या सरल भोजन और दवा 765

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

आवश्यकता के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है; आभूषण, इत्र जैसी वस्तुएँ,

मादक शराब, तंबाकू आदि को विलासिता की वस्तु कहा जा सकता है।

लेकिन विधायी प्रविष्टि को इन मामलों से समाप्त नहीं किया जा सकता है, उदाहरण के लिए

अवधारणा। प्रविष्टि में सभी अभिव्यक्तियाँ शामिल हैं या

उत्सर्जन, 'विलासिता' की धारणा निष्पक्ष और यथोचित हो सकती है (एस. आई. सी.)

जो 'विलासिता' को 'आवश्यकता' से अलग करता है, उसे सीमित नहीं किया जा सकता है सामान और वस्तुएँ। फिजूलखर्ची के तत्व हो सकते हैं या

सेवाओं और गतिविधियों की गुणवत्ता में संलिप्तता। (p.690)।

यह भी माना गया था किः

" विधायी प्रविष्टि में 'विलासिता' की अवधारणा इसके भीतर आती है।

सब कुछ जिसे निष्पक्ष और उचित रूप से समझा जा सकता है

विधायी परीक्षणों (एस. आई. सी. सूचियों) में अभिव्यक्तियाँ समझी जाती हैं, विधायी क्षमता 'उस' के संबंध में सभी मामलों तक फैली हुई है

कानून का क्षेत्र या विषय "। (पी-692)।

लेकिन जैसा कि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं और जैसा कि बहुत स्पष्ट है

उद्धृत अंशों में, यह निर्णय इस धारणा पर दिया गया था कि विलासिता की वस्तुएं प्रविष्टि 62 सूची II द्वारा कवर की गई हैं और इस प्रस्ताव के लिए एक प्राधिकरण नहीं माना जा सकता है कि वस्तुएं या सामान, निर्माण के मामले में, उस प्रविष्टि में निष्पक्ष और यथोचित रूप से शामिल हैं।

श्री साल्वे का तर्क वास्तव में यह है कि एक प्रविष्टि की चौड़ाई है

निर्माण के दूसरे सिद्धांत द्वारा सीमित। दूसरा सिद्धांत यह है कि प्रतिस्पर्धी प्रविष्टियों को सामंजस्यपूर्ण तरीके से पढ़ा जाना चाहिए। संघर्ष से बचने का उचित तरीका प्रविष्टियों को एक साथ पढ़ना और भाषा की व्याख्या करना होगा। एक का दूसरे के द्वारा (गवर्नर जनरल इन काउंसिल v. प्रांत का

मद्रास, (1945) एफ. सी. आर. 17 9 पी. जी. पर। 191-192) ; बॉम्बे राज्य बनाम। नरोत्तमदास जेठाभाई, [1951] एससीआर 51; बार काउंसिल ऑफ यू. पी. बनाम यू. पी. और एन. आर. राज्य। , [1973] I एस. सी. सी. 261; डी. जी. घोष एंड कंपनी (एजेंट्स) (पी) लिमिटेड बनाम केरल और अन्र राज्य। , [1980] 2 एस. सी. सी. 410; होटल और रेस्तरां संघ बनाम। भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 634,657,667-668 और पश्चिम बंगाल राज्य बनाम। केसोरम इंडस्ट्रीज, (2004) 1 स्केल

425,462; मध्य प्रांत और मोटर स्पिरिट और स्नेहक की बेरार बिक्री कराधान अधिनियम, (1938) और आकाशवाणी (1939) एफ. सी. 1,8,40 के मामले में।

निर्धारिती का तर्क है कि प्रविष्टि 62 766 के तहत देय कर

[2

005] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

सूची II वस्तुओं पर कर नहीं हो सकता क्योंकि यह न केवल राज्य को कला के उल्लंघन में बिक्री कर लगाने की अनुमति देगा। 286 लेकिन उस पर अतिक्रमण की अनुमति देगा

सूची I की प्रविष्टियाँ 83 और 84 के तहत संघ के विधायी क्षेत्र। वास्तव में कर निर्धारकों का तर्क है कि राज्यों के पास विवादित विधानों द्वारा,

"निर्यात शुल्क सहित सीमा शुल्क" के संबंध में। प्रविष्टि 84 में "तंबाकू और अन्य निर्मित या उत्पादित वस्तुओं पर उत्पाद शुल्क" की बात की गई है। भारत (ए) मानव उपभोग के लिए मादक शराब (बी) अफीम, भारतीय भांग और अन्य मादक दवाओं और नशीले पदार्थों को छोड़कर, लेकिन इस प्रविष्टि के उप पैराग्राफ (बी) में शामिल शराब या किसी भी पदार्थ से युक्त औषधीय और शौचालय की तैयारी सहित।

राज्यों ने यह तर्क देते हुए इसका विरोध किया है कि प्रविष्टि 62 सूची II

विलासिता वस्तुओं पर कर लगाने की परिकल्पना की गई। जबकि उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क और बिक्री कर सीधे माल पर नहीं होते हैं, बल्कि माल के संदर्भ में होते हैं और यह कि कर निर्माण, आयात/निर्यात और बिक्री की घटनाओं पर लगाए जाते हैं।

राज्यों के अनुसार इस न्यायालय ने अनुच्छेद 289 का अर्थ लगाते हुए ऐसा निर्णय दिया है। (1) रे में: समुद्री सीमा शुल्क अधिनियम, [1964] 3 एस. सी. आर. 787 की धारा 20 में संशोधन के लिए विधेयक। न्यायालय की भाषा में:

" उत्पाद शुल्क के मामले में कर योग्य घटना विनिर्माण है।

माल और शुल्क सीधे माल पर नहीं बल्कि माल पर होता है।

बिनि दिहुनथाय। हम इस संबंध में बिक्री कर की तुलना कर सकते हैं।

जो बेचे गए माल के संदर्भ में भी लगाया जाता है, जहां कर योग्य घटना बिक्री का कार्य है। इसलिए, हालांकि उत्पाद शुल्क और बिक्री दोनों

कर वस्तुओं के संदर्भ में लगाया जाता है, दोनों बहुत अलग हैं

इम्पोस्ट; एक मामले में अधिरोपण निर्माण के कार्य पर है या

उत्पादन जबकि दूसरी ओर यह बिक्री अधिनियम पर है। किसी भी मामले में नहीं इसलिए क्या यह कहा जा सकता है कि उत्पाद शुल्क या बिक्री कर एक कर है।

एक ही कर। इस प्रकार यह प्रतीत होता है कि उत्पाद शुल्क का हिस्सा अर्थशास्त्र पर मानक कार्यों के रूप में ज्ञात अप्रत्यक्ष करों की प्रकृति

और उन्हें संपत्ति पर करों जैसे प्रत्यक्ष करों से अलग किया जाना है

और आय।

इसी तरह निर्यात शुल्क सहित सीमा शुल्क के मामले में

यद्यपि वे वस्तुओं के संदर्भ में लगाए जाते हैं, कर योग्य घटना है

या तो सीमा शुल्क बाधाओं के भीतर वस्तुओं का आयात या उनका निर्यात

सीमा शुल्क बाधाओं के बाहर। ये भी उत्पाद शुल्क जैसे अप्रत्यक्ष कर हैं।

और हमारी राय में इसे वस्तुओं पर प्रत्यक्ष करों के बराबर नहीं माना जा सकता है।

स्वयं "767

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

इसलिए राज्यों के अनुसार, निर्धारिती का तर्क है कि

कराधान पर मौजूदा प्रविष्टियों ने संकेत दिया कि सूची II की प्रविष्टि 62 नहीं कर सकी

ढक्कन वाला सामान बिना किसी पदार्थ के था।

निर्धारिती का प्रस्तुतिकरण दो परिसरों में होता है-पहला

कि किसी उद्देश्य का कराधान केवल एक कर योग्य घटना के संदर्भ में हो सकता है और दूसरा-कि सभी कर योग्य घटनाओं को विधायी प्रविष्टियों द्वारा कवर किया गया है।

जहाँ तक पहले आधार का संबंध है, यह हो सकता है कि किसी वस्तु या वस्तु पर कर केवल कर योग्य घटना के संदर्भ में हो सकता है, लेकिन ऐसे कर और कर योग्य घटना पर कर के बीच अंतर है। पहले मामले में कर का विषय वस्तु है और कर योग्य घटना की घटना के भीतर है

माल पर कर। दूसरे में कर योग्य घटना स्वयं कर का विषय है।

पहली व्याख्या यह है कि वस्तुओं पर कर भी वास्तव में एक कर है

एक कर योग्य घटना पर। समुद्री सीमा शुल्क अधिनियम मामले (ऊपर) में निर्णय जो इस न्यायालय द्वारा कला के तहत अपनी सलाहकार क्षमता में दिया गया था। 143 था।

कला के निर्माण से संबंधित। 289 संविधान से। विधायी परीक्षणों में कराधान प्रविष्टियों की प्रकृति और घटना सीधे मुद्दे में थी और इस मुद्दे के निर्धारण पर ही संघ की कला के तहत राज्यों की संपत्ति पर कर लगाने की शक्ति थी। 289 माना गया था (पी। 822-823 रिपोर्ट)। संपत्ति पर कर को प्रत्यक्ष कर के रूप में वर्णित किया गया था और संपत्ति के संबंध में कर योग्य घटनाओं पर कर को संपत्ति पर प्रभाव के आधार पर अप्रत्यक्ष कर के रूप में वर्णित किया गया था। यद्यपि 'प्रत्यक्ष कर' के संबंध में भी (उस निर्णय में न्यायालय द्वारा उपयोग किए गए अर्थ में) यह अयंगर, जे. द्वारा उनकी सहमति वाली राय में अभिनिर्धारित किया गया था कि यह अंततः प्रभाव की मात्रा का प्रश्न था। उन्होंने कहा (पेज पर। रिपोर्ट का 917) "क्योंकि अंतिम विश्लेषण में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर के बीच का अंतर प्रभाव में अंतर के आधार पर एक अंतर है जिसे इसके नहीं होने के आधार पर एक अंतर के रूप में भी व्यक्त किया जाता है।

संपत्ति पर लेकिन संपत्ति के संबंध में एक कर योग्य घटना पर। यदि कर योग्य घटना केवल संपत्ति का स्वामित्व और उसमें लाभकारी ब्याज पर है, तो यह एक प्रत्यक्ष कर होगा, जबकि यदि संपत्ति और उसके बीच संबंध है।

कर दाता केवल स्वामित्व नहीं है, बल्कि इसके संबंध में लेन-देन जैसा कुछ और है, तो यह एक अप्रत्यक्ष कर होगा। दूसरे शब्दों में यह स्वामित्व की कर योग्य घटना है जो वस्तुओं, वस्तुओं या वस्तुओं पर कर लगाने वाली सभी प्रविष्टियों में कराधान के लिए जीवित रहती है। यह सच है कि इस न्यायालय ने द सेंट्रल प्रोविंस एंड बरार सेल्स ऑफ मोटर स्पिरिट एंड लुब्रिकेंट्स टैक्सेशन एक्ट, (1938) ए. आई. आर. (1939) एफ. सी. 1 में कहा है कि उत्पाद शुल्क वस्तुओं पर एक कर है। ऐसा इसलिए था क्योंकि आम तौर पर वस्तुओं पर कर लगाने की शक्ति,

अनुच्छेद 246 में वस्तुओं के संबंध में कर लगाने की शक्ति शामिल है। इस प्रकार 768

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2

005] 1 एस सी आर।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्री साल्वे ने पहले आधार का समर्थन किया था

सही है।

यह अभिनिर्धारित करने का तार्किक परिणाम कि कर केवल कर योग्य पर ही लगाए जाते हैं

घटना यह है कि जब कोई प्रविष्टि वस्तुओं पर कर लगाने की बात करती है, तब भी इसमें कर योग्य घटनाओं पर कर लगाने का अधिकार शामिल नहीं होता है।

अन्य कराधान प्रविष्टियों के तहत अलग से प्रावधान किया गया है। के संबंध में कर माल को कभी-कभी माल के एक पहलू पर कर के रूप में और कभी-कभी कर योग्य घटना के रूप में संदर्भित किया जाता है (देखें): होटल और रेस्तरां संघ बनाम

भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 634)। शब्दावली जो भी हो, क्योंकि कराधान के क्षेत्र में कोई अतिव्यापी नहीं हो सकता है, ऐसा कर यदि विशेष रूप से

एक विधायी प्रविष्टि के तहत प्रदान किया गया प्रावधान अन्य संबंधित प्रविष्टियों के तहत उपलब्ध कराधान के क्षेत्रों को प्रभावी रूप से संकुचित करता है। यह भी स्वाभाविक है 'जब एक अनिर्दिष्ट अवशिष्ट शक्ति के संबंध में एक व्यक्त शक्ति के दायरे पर विचार किया जाता है, तो बाद वाले की कीमत पर पूर्व की व्यापक व्याख्या दी जाती है'। (मद्रास प्रांत बनाम। बोड्डु पाइदाना, ए. आइ. आर. (1942) एफ. सी. 33,37 प्रति ग्वायर सी. जे.)। उदाहरण के लिए राज्य विलासिता कर की आड़ में नहीं रह सकता है।

प्रविष्टि 62 के तहत सूची II केवल एक वस्तु को विलासिता के रूप में वर्णित करके सूची I की प्रविष्टि 83 और 84 के तहत संघ की अनन्य शक्ति पर प्रभाव डालती है।

बेशक राज्यों के पास सूची II की प्रविष्टि 54 के तहत "समाचार पत्रों के अलावा अन्य वस्तुओं की बिक्री और खरीद पर कर" के संबंध में कानून बनाने की विशेष शक्ति है, लेकिन यह शक्ति स्पष्ट रूप से "सूची I की प्रविष्टि 92 ए के प्रावधानों के अधीन" की गई है।

सूची I की प्रविष्टि 92 ए के बारे में बताती है

" समाचार पत्रों के अलावा अन्य वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर कर, जहां ऐसी बिक्री या खरीद अंतर-राज्यीय व्यापार के दौरान होती है या

64

व्यापार

बिक्री कर लगाने के लिए राज्यों के अधिकार क्षेत्र पर इस सीमा के अलावा,

अनुच्छेद 286 द्वारा लगाए गए प्रतिबंध हैं। अनुच्छेद 286 (1) राज्यों को माल की बिक्री या खरीद पर कर लगाने या अधिकृत करने से रोकता है जहां ऐसी बिक्री या खरीद (ए) राज्य के बाहर होती है, या (बी) भारत के क्षेत्र में माल के आयात या निर्यात के दौरान होती है। इसके अलावा अनुच्छेद 286 (3) प्रदान करता है किः

" किसी राज्य का कोई भी विक्रय, जहाँ तक वह अधिरोपित करता है, या अधिकृत करता है लागू करना -

(क) संसद द्वारा 769 द्वारा घोषित वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर कर।

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

अंतर-राज्यीय व्यापार या वाणिज्य में विशेष महत्व का कानून होना; या

(ख) वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर कर, जो प्रकृति का कर है।

उपखंड (ख), उपखंड (ग) या उपखंड (घ) में निर्दिष्ट

अनुच्छेद 366 का खंड (29 ए),

कर, दरों और कर की अन्य घटनाओं का, जैसा कि संसद कानून द्वारा कर सकती है। निर्दिष्ट करें "।

इस प्रकार संसद को दरों को सीमित करने की सर्वोच्च शक्ति दी गई है।

बिक्री कर जो अन्यथा की अनन्य क्षमता के भीतर हैं बिक्री और खरीद की कुछ वस्तुओं के संबंध में राज्य। हमारे उद्देश्य के लिए प्रासंगिक खंड कला का खंड (ए) है। 286 (3) जो संसद को एक अधिनियम बनाने की अनुमति देता है

अंतर-राज्यीय व्यापार में वस्तुओं को विशेष महत्व का घोषित करने वाला कानून या

व्यापार।

इस शक्ति का प्रयोग करते हुए, केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम की धारा 14। 1956

अंतर-राज्यीय व्यापार या वाणिज्य में कुछ वस्तुओं को विशेष महत्व का घोषित किया है। इसमें तंबाकू गैर-निर्मित और विनिर्मित दोनों रूपों में शामिल है। राज्यों को केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 15 के तहत राज्य के भीतर घोषित वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर बिक्री या खरीद मूल्य के अधिकतम 4 प्रतिशत की सीमा तक कर लगाने या अधिकृत करने से प्रतिबंधित कर दिया गया है।

दिसंबर, 1956 में राष्ट्रीय विकास परिषद, योजना

आयोग, भारत सरकार और राज्य इस बात पर सहमत हुए कि अन्य बातों के साथ-साथ तंबाकू के संबंध में बिक्री कर के स्थान पर उस पर अधिभार लगाया जाना चाहिए।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क, उनके बीच वितरित किए जाने से प्राप्त आय

आयोग ने 30 सितंबर, 1957 की अपनी रिपोर्ट में, उत्पाद शुल्क के अतिरिक्त शुल्क (विशेष महत्व के सामान) अधिनियम 1957 को संसद द्वारा पारित किया गया था। अधिनियम का उद्देश्य चीनी, तंबाकू और मिल निर्मित कपड़ों पर केंद्र और राज्यों द्वारा लगाए गए बिक्री कर के प्रतिस्थापन में उत्पाद शुल्क का अतिरिक्त शुल्क लगाना और इन करों की शुद्ध आय को वितरित करना था, सिवाय इसके कि संघ राज्य क्षेत्रों को देय आय, राज्यों को। यह प्रावधान किया गया था कि जो राज्य 1 अप्रैल, 1958 के बाद इन वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर कर लगाता है, वह एडीई अधिनियम के तहत अतिरिक्त शुल्क की शुद्ध आय के वितरण में भाग नहीं ले सकता है। प्रावधान भी 770 था।

[

2005] 1 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अंतर-राज्यीय व्यापार या वाणिज्य में विशेष महत्व का घोषित किया गया है ताकि उन पर समान उत्पाद शुल्क लगाए जाने के बाद, यदि किसी भी राज्य द्वारा बिक्री कर लगाया जाता है, तो वह 1 अप्रैल, 1958 से केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 15 के प्रतिबंधों के अधीन था।

ए. डी. ई. अधिनियम की धारा 3 आरोप अनुभाग है जिसके तहत अतिरिक्त शुल्क लगाया जाता है।

निर्मित या भंडार में रखी विशिष्ट वस्तुओं पर उत्पाद शुल्क लगाया जाता है। धारा 3 की उप-धारा (1) में कहा गया हैः

" 3. शुल्क और अतिरिक्त शुल्कों का संग्रह-(1) लगाया जाएगा। और निम्नलिखित वस्तुओं के संबंध में एकत्र किया गया, अर्थात् चीनी, तंबाकू,

किसी भी कारखाने, गोदाम या अन्य परिसर के परिसर के भीतर स्टॉक जहाँ उक्त माल का निर्माण, भंडारण या उत्पादन किया गया था, या

उसके अनुरूप कोई भी परिसर, दरों की दर पर उत्पाद शुल्क

इस अधिनियम की पहली अनुसूची में विनिर्दिष्ट। (जोर दिया गया)।

एडीई की धारा 3 के अंतर्गत आने वाली वस्तुओं पर कोई भी राज्य विलासिता कर नहीं लगा सकता है।

समान कर योग्य घटना के लिए माल के संबंध में अधिनियम, अर्थात निर्माण पर संग्रहीत माल, केवल माल को विलासिता की वस्तु के रूप में वर्णित करके। सूची I की प्रविष्टि 84 और सूची II की प्रविष्टि 62 के तहत प्रयोग की गई शक्तियों का अतिव्यापी होना।

तब यह स्पष्ट हो जाएगा। इसी तरह आयातित वस्तुओं का भंडारण या भंडारण सूची I की प्रविष्टि 83 द्वारा कवर किया गया है और इसे लागू करने का विषय नहीं बनाया जा सकता है।

राज्यों।

संविधान (छियालिसवाँ संशोधन) अधिनियम, 1982 द्वारा वाक्यांश

" वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर कर को अनुच्छेद 366 में खंड 29 ए की शुरूआत द्वारा व्यापक रूप से परिभाषित किया गया था। इसमें लिखा हैः

" (29 क) 'वस्तुओं की बिक्री या खरीद पर कर' में शामिल हैं -

(क) अंतरण पर कर, अनुबंध के अनुसरण से भिन्न,

नकद विलंबित भुगतान या अन्य के लिए किसी भी माल में संपत्ति का मूल्यवान विचार;

(ख) माल में संपत्ति के हस्तांतरण पर कर (चाहे वह माल के रूप में हो या किसी अन्य रूप में) एक कार्य अनुबंध के निष्पादन में शामिल;

(ग) किराया खरीद या किसी भी प्रणाली पर माल की डिलीवरी पर कर किश्तों द्वारा भुगतान; 771

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

(घ) किसी भी उद्देश्य के लिए किसी भी वस्तु का उपयोग करने के अधिकार के हस्तांतरण पर कर

(चाहे एक निर्दिष्ट अवधि के लिए) प्रत्येक के लिए, आस्थगित भुगतान

या अन्य मूल्यवान विचार ';

(ई) किसी भी अनिगमित संघ द्वारा वस्तुओं की आपूर्ति पर कर

या व्यक्तियों के निकाय को उसके किसी सदस्य को नकद, विलंबित भुगतान के लिए

या अन्य मूल्यवान विचार;

(च) किसी सेवा के माध्यम से या उसके हिस्से के रूप में या किसी सेवा में आपूर्ति पर कर

अन्य तरीका जो भी हो, वस्तुओं का, भोजन या किसी अन्य वस्तु का

मानव उपभोग या किसी भी पेय (चाहे वह मादक हो या न हो) के लिए,

जहाँ ऐसी आपूर्ति या सेवा नकद, आस्थगित भुगतान के लिए है या

अन्य मूल्यवान विचार,

और किसी भी माल का ऐसा हस्तांतरण, वितरण या आपूर्ति मानी जाएगी।

हस्तांतरण, वितरण करने वाले व्यक्ति द्वारा उन वस्तुओं की बिक्री होना

या उस व्यक्ति द्वारा उन वस्तुओं की आपूर्ति और खरीद जिसे वे

हस्तांतरण वितरण या आपूर्ति की जाती है ";

हालाँकि, सूची II की प्रविष्टि 54 का दायरा बढ़ाते हुए, शक्तियाँ

286 केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 14 और 15 और एडीई अधिनियम, 1957 के साथ पढ़ें। संविधान के अनुच्छेद 366 के खंड (29 ए) के उपखंड (बी) के आधार पर अधिरोपित कर इस प्रकार उसी के अधीन हो जाता है। ऐसा अनुशासन जिसके लिए राज्य सूची की प्रविष्टि 54 के तहत कोई शुल्क संविधान के अधीन किया जाता है। जब हम संविधान के अनुच्छेद 286 को देखते हैं तो स्थिति वही होती है। यदि कोई घोषित वस्तु जो केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 14 में निर्दिष्ट है, ऐसे हस्तांतरण में शामिल है, तो आपूर्ति करें।

या वितरण, जिसे अनुच्छेद 366 के खंड (29-ए) में संदर्भित किया गया है, किसी राज्य की बिक्री कर कानून जो उस पर बिक्री कर लगाने का प्रावधान करती है,

केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 15 में उल्लिखित प्रतिबंधों का पालन करना।

इसलिए कोई भी राज्य किसी वस्तु को विलासिता के रूप में वर्णित करके शुल्क लगाने की कोशिश नहीं कर सकता है।

इसकी आपूर्ति पर कर। इस बात पर कोई विवाद नहीं हो सकता कि जहां तक उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश का संबंध है, अगर यह सूची II की प्रविष्टि 62 की उनकी व्याख्या के लिए नहीं होता, तो कर केवल प्रविष्टि 54 सूची II के लिए संदर्भित होता। यदि प्रविष्टि 62 सूची I माल के कराधान की अनुमति नहीं देती है, तो शुल्क संवैधानिक रूप से टिकाऊ नहीं होगा।

हमारी राय में विलासिता की वस्तुओं को शामिल करते हुए प्रविष्टि 62 सूची II को पढ़ें।

इन सभी संवैधानिक प्रतिबंधों को [2005] 1 एस. सी. आर. को अनुमति देते हुए पारित नहीं होने दिया जा सकता है।

राज्य वस्तुओं की आपूर्ति पर उन्हें विलासिता का सामान बताकर कर लगाते हैं। जैसा कि संघ की ओर से पेश श्री परासरन ने सही तर्क दिया है। भारत में विलासिता की आपूर्ति और कुछ नहीं बल्कि वस्तुओं की आपूर्ति है क्योंकि सामान स्वयं विलासिता का निर्माण करते हैं।

इसलिए भले ही तंबाकू विलासिता की वस्तु हो, लेकिन इसकी आपूर्ति पर कर इसके दायरे में आता है।

राज्य की अनन्य क्षमता लेकिन केंद्र की धारा 14 और 15 के साथ पठित अनुच्छेद 286 के तहत निर्धारित संवैधानिक प्रतिबंधों के अधीन

बिक्री कर अधिनियम, 1956 और सबसे महत्वपूर्ण रूप से 1957 का ए. डी. ई. अधिनियम जिसके तहत तंबाकू पर कोई बिक्री कर नहीं लगाया जा सकता है यदि राज्य उस अधिनियम के तहत लाभ लेना चाहता है।

उत्पाद शुल्क या सीमा शुल्क लगाने के अधिकारों के घटाव के बावजूद

और उन मामलों में बिक्री कर लगाने के लिए राज्यों पर प्रतिबंध जब राज्य वस्तुओं पर कर लगा सकते हैं, हमें अभी भी यह निर्धारित करना होगा कि क्या सूची II की प्रविष्टि 62 में वस्तुओं पर कर शामिल हैं या नहीं।

समुद्री सीमा शुल्क अधिनियम मामले में निर्णय को देखते हुए, दूसरा आधार

श्री साल्वे द्वारा प्रस्तावित प्रस्ताव अस्वीकार्य है। जैसा कि हमने देखा है, उस मामले में इस न्यायालय ने माना कि स्वामित्व की कर योग्य घटना की अवधारणा में निहित है

वस्तुओं पर कर। विधायी सूचियों में कर योग्य घटनाओं पर प्रविष्टियां संपूर्ण नहीं हैं, यह भी मान्यता प्राप्त है और कला में प्रदान किया गया है। 248 (2) जो समवर्ती या राज्य सूचियों में से किसी में भी उल्लिखित कर को अधिरोपित करने वाला कोई कानून बनाने के लिए संसद की शक्ति का प्रावधान करता है। यह अवशिष्ट शक्ति है इसके अलावा यदि कोई वस्तु या वस्तु केवल कर योग्य घटना के संबंध में कर योग्य है, और जैसा कि श्री साल्वे ने तर्क दिया है, सभी कर योग्य घटनाओं के लिए विभिन्न विधायी शीर्षों में प्रावधान किया गया है, तो उस टोकन द्वारा कोई भी वस्तु या वस्तु कर योग्य नहीं हो सकती है। इससे यह होगा कि

राज्य सूची में विभिन्न प्रविष्टियाँ जिनमें प्रविष्टियाँ 57 और 58 विषयहीन हैं। चूँकि हम यह स्वीकार नहीं कर सकते हैं कि कराधान प्रविष्टियाँ सभी कर योग्य को पूरी तरह से सूचीबद्ध करती हैं उदाहरण के लिए, यह नहीं है कि सूची II की प्रविष्टि 62 माल को शामिल नहीं करती है। इसलिए केवल विधायी सूचियों और उनमें कर प्रविष्टियों के निर्माण पर यह कहना संभव नहीं है कि प्रविष्टि 62 सूची II राज्यों को विलासिता की वस्तुओं पर कर लगाने की अनुमति नहीं देती है।

श्री साल्वे द्वारा प्रतिपादित दूसरे आधार को अस्वीकार करने के बाद,

अगला सवाल यह है कि क्या प्रविष्टि 62 सूची II की भाषा का समाधान होगा

मुद्दा। प्रविष्टि 62 के भीतर विभिन्न करों का संयोजन ही हमारी दृष्टि में विशेष महत्व का है। प्रविष्टि "मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ पर करों सहित विलासिता पर करों" की बात करती है। "सम्मिलित" शब्द को कुछ अर्थ दिया जाना चाहिए। साधारण भाषा में यह 773 इंगित करता है।

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

कि "सम्मिलित" शब्द के बाद जो आता है वह पूर्ववर्ती पूरे शब्द में शामिल है या निहित है या उसका एक हिस्सा है। सम्मिलित वस्तुओं की प्रकृति

यह न केवल समग्र के चरित्र में भाग लेगा, बल्कि समग्र के स्पष्टीकरण के रूप में भी समझा जा सकता है।

यह भी माना गया है कि 'शामिल' शब्द कुछ संदर्भों में हो सकता है।

सीमित शब्द (दक्षिण गुजरात रूफिंग टाइल्स मैन्युफैक्चरर्स बनाम। गुजरात राज्य, [1976] 4 एससीसी 601। सूची II की प्रविष्टि 62 के संदर्भ में यह होगा

इसका मतलब यह नहीं है कि 'विलासिता' शब्द मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ तक ही सीमित रहेगा, बल्कि केवल विशेषता पर जोर देगा।

जो समूह के लिए सामान्य है। यदि विलासिता को कुछ ऐसे अर्थ के रूप में समझा जाता है जो विशुद्ध रूप से आनंद के लिए और जीवन की आवश्यकताओं से परे है, तो इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ इस तरह की समझ के भीतर आएंगे। इसके अतिरिक्त, मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ सभी गतिविधियाँ हैं। विलासिता भी एक गतिविधि का अर्थ रखने में सक्षम है और इसे मुख्य रूप से और पारंपरिक रूप से इस रूप में परिभाषित किया गया है। यह केवल व्युत्पन्न रूप से और हाल ही में विलासिता के एक लेख को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है। कोई यह मान सकता है कि एक प्रविष्टि के तहत इन करों का युग्मन आकस्मिक नहीं था, बल्कि इन सामान्य विशेषताओं के कारण था।

जहाँ दो या दो से अधिक शब्द समरूप अर्थ के लिए अतिसंवेदनशील हैं

एक साथ जोड़े जाने पर, उन्हें उनके संज्ञानात्मक अर्थों में उपयोग किया जाता है। वे अपने रंग को एक दूसरे से लेते हैं और एक दूसरे के योग्य होते हैं, सामान्य शब्द का अर्थ कम सामान्य के समान अर्थ तक सीमित होता है। जैसा कि मैक्सवेल में मूर्ति 12 वीं संस्करण की व्याख्या पर कहा गया है। P.289।

" शब्द, और विशेष रूप से सामान्य शब्दों को अलग-अलग नहीं पढ़ा जा सकता है।

उनका रंग और उनकी सामग्री उनके संदर्भ से ली गई है। ”

दूसरे शब्दों में कहें तो शामिल शब्द स्पष्टीकरणात्मक या सचित्र हो सकते हैं।

सामान्य शब्द। इस प्रकार यू. पी. राज्य बनाम राजा आनंद, [1967] 1 एस. सी. आर. 362, कला का निर्माण करते हुए। 31 ए (2) जैसा कि संविधान (सत्रहवाँ संशोधन) अधिनियम, 1964 द्वारा अधिनियमित किया गया है, जिसका प्रासंगिक अंश इस प्रकार हैः

" 31 ए (2) इस लेख में -

(क) 'सम्पत्ति' पद किसी स्थानीय क्षेत्र के संबंध में होगा -

उस अभिव्यक्ति या उसके स्थानीय समकक्ष के समान अर्थ में है

उस क्षेत्र में लागू भूमि कार्यकालों से संबंधित मौजूदा कानून और

1 . ए-जी वी। हैनोवर के राजकुमार अर्नेस्ट ऑगस्टस (1957) एसी 436, प्रति विस्काउंट साइमंड्स, 461 पर।

इसमें ये भी शामिल हैं -

(i) XXX XXX XXX XXX

((ii) XXX XXX XXX XXX

((ग) कृषि के प्रयोजनों के लिए या प्रयोजनों के लिए धारित या पट्टे पर दी गई कोई भूमि।

बंजर भूमि, वन भूमि, चरागाह के लिए भूमि सहित इसके सहायक

या किसानों द्वारा कब्जा किए गए भवनों और अन्य संरचनाओं के स्थल भूमि, कृषि श्रमिकों और ग्रामीण कारीगरों की;

इस अदालत ने कहाः

" हमारी राय में "सम्मिलित" शब्द का उद्देश्य स्पष्ट करना है या

क्या बंजर भूमि या वन भूमि को सक्षम माना जा सकता है कृषि के सहायक उद्देश्यों के लिए आयोजित या पट्टे पर दिया जा रहा है।

वर्तमान संदर्भ में 'विलासिता' का सामान्य अर्थ समझाया गया है।

या स्पष्ट किया जाता है और इसे मनोरंजन, मनोरंजन, जुआ और सट्टेबाजी जैसे कम सामान्य शब्दों के अनुरूप अर्थ में समझा जाना चाहिए, जो इसके साथ जुड़े हुए हैं। व्याख्या के इस सिद्धांत को 'नोसिटूर ए सोसाइटिस' के रूप में जाना जाता है, जिसे रेनबो स्टील्स लिमिटेड बनाम में अनुमोदन प्राप्त हुआ है। सी. एस. टी., [1981] 2 एस. सी. सी. 141,145 हालांकि राज्य में इसके अंधाधुंध अनुप्रयोग में संदेह है

बॉम्बे बनाम। अस्पताल मजदूर सभा, आकाशवाणी (1960) एससी 610। बाद के मामले में इस न्यायालय को औद्योगिक विवाद अधिनियम की धारा 2 (जे) का अर्थ निकालने की आवश्यकता थी जिसमें कहा गया थाः

" धारा 2 (जे) में प्रावधान है कि 'उद्योग' का अर्थ है कोई भी व्यवसाय, व्यापार,

नियोक्ताओं का उपक्रम, निर्माण या कॉल और इसमें कोई भी शामिल है

बुलाना, सेवा, रोजगार, हस्तशिल्प या औद्योगिक व्यवसाय या

कामगारों की नियुक्ति "।

यह पाया गया कि परिभाषा में शब्द बहुत व्यापक थे और

निश्चित आयात। यह सुझाव दिया गया था कि इन शब्दों को सीमित रूप में पढ़ा जाना चाहिए।

'एक समाज नहीं' के सिद्धांत पर शामिल वस्तुओं को ध्यान में रखते हुए। इस सुझाव को निम्नलिखित भाषा में अस्वीकार कर दिया गया थाः

" यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि समाज केवल एक नियम है -

दायरा बनाने के लिए जानबूझकर व्यापक शब्दों का उपयोग किया गया है। परिभाषित शब्द का तदनुसार व्यापक। यह केवल वह जगह है जहाँ 775

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

के शब्दों के साथ व्यापक शब्दों को जोड़ने में विधानमंडल का इरादा

संकीर्ण महत्व संदिग्ध है, या अन्यथा स्पष्ट नहीं है कि

निर्माण के वर्तमान नियम को उपयोगी रूप से लागू किया जा सकता है। यह भी हो सकता है

लेकिन, जहां व्यापक शब्दों का उपयोग करने में विधानमंडल का उद्देश्य स्पष्ट है और अस्पष्टता से मुक्त, विचाराधीन निर्माण का नियम नहीं हो सकता है

सेवा में दबाया गया "। (p.614)

हम इस अंश को इस सिद्धांत के अनुप्रयोग को छोड़कर नहीं पढ़ते हैं।

वर्तमान मामले के लिए एक समाज की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह पर्याप्त रूप से प्रदर्शित किया गया है

इस अधिकार के संदर्भ में कि प्रविष्टि 62 में "विलासिता" शब्द का अर्थ संदिग्ध है और इसे विभिन्न अर्थों में परिभाषित और समझा गया है।

ब्लैक डायमंड बेवरेजेज v. वाणिज्यिक कर अधिकारी, [1998] 1

एस. सी. सी. 458, अधिसूचित वस्तुओं के संबंध में 'बिक्री मूल्य' की परिभाषा

पश्चिम बंगाल बिक्री कर अधिनियम, 1954 की धारा 2 (डी) के तहत कंटेनरों आदि के लिए ली जाने वाली राशि के विशिष्ट समावेश के संदर्भ में प्रतिबंधित करने की मांग की गई थी। तर्क यह था कि चूंकि माल ढुलाई शुल्क को स्पष्ट रूप से शामिल नहीं किया गया था, इसलिए उन्हें 'बिक्री मूल्य' से बाहर रखा जाना चाहिए। उस में

इस संदर्भ में इस न्यायालय ने कहा कि परिभाषा का समावेशी भाग मुख्य प्रावधान को उसका स्वाभाविक अर्थ प्राप्त करने से नहीं रोक सकता है और प्राकृतिक अर्थ के अनुसार 'बिक्री मूल्य' में माल ढुलाई शुल्क शामिल है। यह कहा गया था कि समावेश द्वारा बिक्री मूल्य को कुछ ऐसा अर्थ देने के लिए बढ़ाया गया था जो सामान्य रूप से इसकी परिभाषा के भीतर नहीं आता था। यह निर्णय प्रासंगिक नहीं है क्योंकि यह किसी का तर्क नहीं है कि आनंद के अर्थ में विलासिता स्वाभाविक रूप से मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ को शामिल नहीं करेगी।

हम इस बात से अवगत हैं कि समाज को असंवेदनशील कहने का सिद्धांत विश्वासघाती हो सकता है।

एक तब तक जब तक कि उन 'समाजों' को नहीं जाना जाता जिनसे 'समाज' संबंधित हैं। जोखिम तब मौजूद हो सकता है जब निकटता के अलावा कोई अन्य कारक न हो

' समाज '। लेकिन जहाँ, यहाँ के रूप में, व्यापक अर्थ का एक शब्द है जो अस्पष्टता से मुक्त नहीं है, वहाँ 'सहित' जैसे शब्दों का जोड़ है

समाजों का पर्याप्त संकेत। जैसा कि हमने कहा है कि वर्तमान संदर्भ में 'शामिल' शब्द शामिल शब्द के साथ एक समानता या साझा विशेषताओं या विशेषताओं को इंगित करता है।

इसके अलावा जहां वस्तुओं को कराधान का उद्देश्य बनाया गया है, या तो

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, विधायी सूचियों में प्रविष्टियों ने विशेष रूप से ऐसा कहा है या ढोंग ऐसा है कि कर का विषय आवश्यक निहितार्थ का अनुसरण करता है। सूची II में ही, राज्य विधानमंडल को प्रविष्टि 53 के तहत माल के प्रवेश पर कर लगाने का अधिकार दिया गया है, 'माल की ढुलाई पर और [2005] 1 एस. सी. आर.

II? बाद के मामले में, शुल्क सूची III की प्रविष्टि 35 के प्रावधानों के अधीन होगा और इसलिए संसद द्वारा अधिभारित होने में सक्षम होगा। यदि यह संदर्भित है प्रविष्टि 62 के अनुसार संसद में ऐसी कोई समवर्ती शक्ति नहीं होगी।

अतः व्याख्या के सामान्य सिद्धांतों के अनुप्रयोग पर, हम

यह माना जाएगा कि सूची II की प्रविष्टि 62 में 'विलासिता' शब्द का अर्थ है उस चीज़ का आनंद लेने या उसमें लिप्त होने की गतिविधि जो महंगी है या जिसे आम तौर पर समाज के एक औसत सदस्य की आवश्यक आवश्यकताओं से परे माना जाता है, न कि विलासिता की वस्तुओं के रूप में।

ऐसा न हो कि हम पर कड़ाई से मौखिक व्याख्या के अंधे पालन का आरोप लगाया जाए

हम इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि सूची-II की प्रविष्टि 62 के पीछे का विधायी इतिहास एक शुद्ध प्रश्न पर हमारे द्वारा किए गए निष्कर्ष के खिलाफ नहीं है। व्याख्या। भारत सरकार अधिनियम, 1915 अधिनियम (भारत सरकार अधिनियम 1916 और 1919 द्वारा संशोधित) ने देश को बंगाल और मद्रास (धारा 46) की दो प्रेसीडेंसी सहित प्रांतों में विभाजित करने का प्रावधान किया। प्रत्येक प्रांत के स्थानीय विधानमंडल को "शांति और अच्छी सरकार के लिए" 1915-19 अधिनियम की धारा 80-A के तहत कानून बनाने का अधिकार था।

उस प्रांत से। 16 दिसंबर, 1920 को अनुसूचित कर नियम बनाए गए, जिन्होंने स्थानीय सरकार के उद्देश्य से किसी प्रांत की विधान परिषद को नियमों की अनुसूची I में सूचीबद्ध करों को लागू करने की अनुमति दी।

इनमें अन्य बातों के साथ शामिल हैंः

एस. नं. 3. कानून द्वारा अनुमत किसी भी प्रकार के सट्टेबाजी या जुए पर कर। एस. एल. सं. 5 ए मनोरंजन पर कर

एस. एल. नंबर 6. किसी भी विशिष्ट विलासिता पर कर। भारतीय कराधान जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट में इसका उल्लेख किया था।

1924-25 कि तंबाकू पर कर नहीं लगाया जाता था। यह सिफारिश की गई थी कि तंबाकू उत्पादों के निर्माण पर एक नियमित उत्पाद शुल्क प्रणाली लागू की जानी चाहिए या तंबाकू के खुदरा विक्रेताओं पर बिक्री कर या लाइसेंस शुल्क लगाया जाना चाहिए।

यह महत्वपूर्ण है कि सूची I Sl.No.6 के तहत तंबाकू पर शुल्क लगाने का कोई सुझाव नहीं था।

भारत सरकार अधिनियम 1915-1919 और सरकार के बीच

भारत अधिनियम, 1935 के अनुसार, इन सूचियों में परिवर्तन हुआ। 1915-1919 अधिनियम के तहत केवल विधान की प्रांतीय शक्तियों का संकेत था

प्रत्येक अन्य विषय को केंद्र की विधायी शक्तियों के भीतर छोड़ देना। में।

1921 , हस्तांतरण नियम लागू हुए। निहित नियमों की अनुसूची I

दो भाग। अनुसूची 1 के भाग 1 में वे विषय शामिल थे जिन्हें भारतीय विधानमंडल द्वारा या विधिबद्ध किया जा सकता था। प्रांतीय विषयों को भाग II के तहत वर्गीकृत किया गया था। अनुसूचियों में शामिल प्रांतीय राजस्व के स्रोत

प्रांतों के साथ कर नियमों को भाग II में बरकरार रखा गया था।

भारत सरकार अधिनियम, 1935 की अनुसूची VII जिसने

1915-1919 अधिनियम ने संघ और प्रांतों के बीच विधायी शक्तियों को भी वर्गीकृत किया। इसमें दो विशेष सूचियाँ और एक समवर्ती सूची थी। अनुसूची की सूची I संघीय विधायी सूची थी और इसमें विशेष रूप से संघ को सौंपे गए मामले शामिल थे। प्रविष्टि 45 में लिखा है "तंबाकू और भारत में निर्मित या उत्पादित अन्य वस्तुओं पर उत्पाद शुल्क"। सूची II, जो प्रांतीय विधायी सूची थी, में एक प्रविष्टि संख्या 48 "वस्तुओं की बिक्री पर कर" और विज्ञापन शामिल थे। प्रविष्टि 50 में लिखा है: " मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ पर कर सहित विलासिता पर कर। यहाँ भी किसी भी वस्तु पर इस प्रविष्टि के तहत राज्य द्वारा कोई कर लगाए जाने का कोई प्रमाण नहीं है। दूसरी ओर तंबाकू पर कर लगाने को सूची I की प्रविष्टि 45 के तहत लाया गया था।

प्रांतीय सूची की प्रविष्टि 50 (अब सूची II की प्रविष्टि 62) का सहारा लिया गया था।

बॉम्बे राज्य द्वारा छावनी अधिनियम, 1924 के तहत सिनेमा घरों पर मनोरंजन कर लगाने के लिए। कर को इस आधार पर बरकरार रखा गया था कि

प्रविष्टि में एक ऐसे कानून पर विचार किया गया जो मनोरंजन के कार्य पर कर लगाता है-वेस्टर्न इंडिया थिएटर्स लिमिटेड v. छावनी बोर्ड, पूना, [1959] सप।

2 एससीआर 63,69।

वर्तमान संविधान के निर्माण से पहले में बहस

संविधान सभा दर्शाती है कि सूची II की प्रविष्टि 62 को "मनोरंजन, मनोरंजन, सट्टेबाजी और जुआ, दौड़ पर कर" के रूप में पढ़ा जाना चाहिए।

और इस तरह की अन्य विलासिताओं को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया गया था कि यह प्रवेश के दायरे में कटौती करेगा। सेवकों पर कर का उदाहरण जो "चाहिए"

संभवतः असंशोधित प्रविष्टि के भीतर होना "संभवतः संशोधन द्वारा बहिष्कृत होने के रूप में उद्धृत किया गया था। वास्तव में "मामूली और घरेलू नौकरों पर एक कर" था, 778

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[

2005] 1 एस सी आर।

1915-1919 अधिनियम के तहत बनाए गए कर नियमों की अनुसूची II के तहत,

अधिरोपित करने के लिए प्रांतीय विधान परिषद की क्षमता के भीतर, या राज्य विधान परिषद के अधिकार के साथ

कोई भी स्थानीय प्राधिकरण। यह कराधान नियमों की अनुसूची I के तहत 'किसी भी निर्दिष्ट विलासिता पर कर' लगाने के लिए राज्य विधान परिषद को दिए गए अधिकार से अलग एक प्रविष्टि थी। किसी भी स्थिति में 'सेवक और अनुचर' कर सकते थे

शायद ही "माल" के साथ तुलना की जाए। यह शायद उनका रोजगार था जिसे एक संभावित विलासिता माना जाता था। एक बार फिर इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि

सुझाव की अस्वीकृति संभावित बहिष्करण के कारण नहीं थी

विलासिता के सामान।

संविधान लागू होने के बाद, इसके निर्णय को छोड़कर

ए. बी. अब्दुल कादिर बनाम में न्यायालय केरल राज्य, (ऊपर), (1976) में, सूची II की प्रविष्टि 62 को जुआ पर कर लगाने के उद्देश्य के अलावा लागू नहीं किया गया था।

और सट्टेबाजी (बॉम्बे राज्य बनाम। आर. एम. डी. चमरबागवाला, [1957] एस. सी. आर. 874) या सुविधाओं के आनंद या भोग के प्रावधानों पर कर लगाने के लिए।

होटलों और रेस्तरां में (एक्सप्रेस होटल बनाम। गुजरात राज्य, [1989] 3 एससीसी

677 ; ई. एल. ई. एल. होटल्स एंड इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड और अन्य। वी. भारत संघ, [1989] 3 एस. सी. सी. 698; ईस्ट इंडिया होटल्स लिमिटेड बनाम। पश्चिम बंगाल राज्य, [1990] सप. एससीसी

755 ; स्पेन्स होटल्स प्रा. लिमिटेड और एन. आर. वी. पश्चिम बंगाल राज्य और अन्य। , [1991] 2 एस. सी. सी. 154 और ईस्ट इंडिया होटल्स लिमिटेड, श्रीनगर बनाम। जम्मू और कश्मीर राज्य और अन्र. , [1994] सप. 2 एससीसी 580)।

इस प्रकार सूची II की प्रविष्टि 62 का संवैधानिक इतिहास बताएगा कि

सभी संवैधानिक अधिनियमों में 'विलासिता कर' से संबंधित प्रविष्टि के अस्तित्व के बावजूद, 1915 के बाद से, 1993 तक वस्तुओं पर लगाया जाने वाला कर (अब्दुल कादिर के मामले को छोड़कर) कभी नहीं मांगा गया था। विलासिता वस्तुओं पर कर लगाने का तरीका हमेशा उन्हें भारी दरों पर उत्पाद शुल्क, बिक्री कर, सीमा शुल्क आदि की मौजूदा वित्तीय व्यवस्थाओं के अधीन करना था। अनुच्छेद 366 (29ए) या अनुच्छेद 286 या सूची I की प्रविष्टियां 83 और 84 में उन वस्तुओं की प्रकृति के बारे में कोई भेद नहीं

किया गया है जो बिक्री उत्पाद शुल्क या आयात का विषय हो सकते हैं, चाहे वे आवश्यकता की वस्तुएं हों या विलासिता की वस्तुएं। यह वह अर्थ भी है जिसमें राज्यों ने इस शब्द को हमेशा से समझा है जैसा कि इसमें संकेत दिया गया है। कर जाँच आयोग द्वारा 1953-54 2 में बिक्री कर लगाने के संबंध में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में दिए गए उनके साक्ष्य। सवाल यह था कि "क्या कुछ वस्तुओं के लिए सामान्य दर से अधिक शुल्क की विशेष दरें होनी चाहिए? यदि हां, तो किस प्रकार के लेखों के लिए? . सभी राज्यों द्वारा इस प्रश्न का उत्तर सकारात्मक था। यह हमारे लिए पर्याप्त होगा

2. कराधान जाँच आयोग की रिपोर्ट 1953-54 खंड। IV भाग III पीपी।

22 779

गोडफ्रे फिलिप्स इंडिया लिमिटेड। वी. यू. पी. राज्य [रूमा पाल, जे।]

उन दोनों राज्यों की प्रतिक्रिया को नोट करने का उद्देश्य जिनके क़ानून विवादित हैं

अर्थात्। एपी और यूपी। आंध्र प्रदेश ने कहाः

" इस राज्य में वस्तुओं पर उच्च दर पर कर की विशेष दरें लगाई जाती हैं।

अधिनियम की धारा 3 (2) में उल्लिखित, जो विलासिता के सामान हैं। यह है।

इस सूची में शामिल करके लेखों की संख्या बढ़ाने का प्रस्ताव अन्य राज्यों की सूचियों द्वारा ध्यान में लाई गई कुछ अन्य वस्तुएँ।

इसी तरह उत्तर प्रदेश ने कहाः

" शुल्क की विशेष दरें, जो सामान्य दरों से अधिक हैं, में उचित हैं

कई विलासिता वस्तुओं का सम्मान, जिन पर अनावश्यक रूप से अधिक लाभ होता है

उत्पादकों या विक्रेताओं द्वारा बनाए जा रहे हैं और जिनमें से सामान हैं उपभोग को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

ऐतिहासिक रूप से इसलिए विलासिता वस्तुओं पर कर को एक भाग के रूप में देखा जाता था

सूची II की प्रविष्टि 54 या सूची I की प्रविष्टि 83 और 84 लेकिन सूची II के प्रयास 62 के तहत कर के रूप में नहीं। एकमात्र अपवाद केरल वैलिडेटिंग क़ानून था जो अब्दुल कादिर का विषय था जहाँ निर्धारिती ने इस बात पर सवाल नहीं उठाया कि प्रविष्टि 62 वस्तुओं और वस्तुओं से संबंधित थी और विरोध का एकमात्र बिंदु यह था कि तंबाकू विलासिता की वस्तु नहीं थी। केवल 1993 में महाराष्ट्र राज्य ने बॉम्बे विलासिता कर अधिनियम, 1993 लागू किया, जिसमें वस्तुओं पर सीधे विलासिता कर लगाया गया था। 1994 में इसे वापस ले लिया गया था, लेकिन जल्द ही अन्य राज्यों ने भी इसका अनुसरण किया, जिसके परिणामस्वरूप इस तरह के कानून बने, जिनमें से कुछ अब हमारे सामने विवादित हैं, जहां वस्तुओं पर विलासिता कर की लेवीयता के बारे में सवाल उठाया जाता है।

प्रविष्टि 62 की भाषा और विधायी इतिहास को देखते हुए हम मानते हैं कि

सूची II की प्रविष्टि 62 वस्तुओं या वस्तुओं पर कर लगाने की अनुमति नहीं देती है। हमारे निर्णय में, प्रविष्टि में "विलासिता" शब्द भोग, आनंद या आनंद की गतिविधियों को संदर्भित करता है। जहाँ तक विवादित कानूनों में से कोई भी किसी भी गतिविधि पर कर लगाने का प्रयास नहीं करता है और निश्चित रूप से विलासिता वस्तुओं के रूप में वर्णित वस्तुओं पर कर लगाने का प्रयास करता है, उन्हें विधायी रूप से अक्षम होना चाहिए और घोषित किया जाना चाहिए। हालांकि सोमैया ऑर्गेनिक्स (इंडिया) लिमिटेड में सिद्धांतों का पालन करना। उत्तर प्रदेश राज्य, [2001] 5 एस. सी. सी. 519 विवादित अधिनियमों को निरस्त करते हुए हम पहले से ही भुगतान किए गए करों के किसी भी रिफंड की अनुमति देना उचित नहीं समझते हैं।

विवादित अधिनियम। निर्धारिती द्वारा दी गई किसी भी बैंक गारंटी का भुगतान कर दिया जाएगा।

राज्य सरकारों की ओर से यह कहा गया कि प्राप्त करने के बाद

विलासिता कर की वसूली के खिलाफ इस न्यायालय के अंतरिम आदेश, अपीलार्थी सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2

005] 1 एस सी आर।

780

उपभोक्ताओं/ग्राहकों से इस तरह का कर वसूलना जारी रखा। आरोप है कि उन्होंने संबंधित राज्य सरकारों को इस तरह के कर का भुगतान नहीं किया। इसलिए, यह प्रस्तुत किया गया था कि यदि अपीलकर्ताओं को उपभोक्ताओं से विलासिता कर के रूप में उनके द्वारा एकत्र की गई राशि को बनाए रखने की अनुमति दी जाती है, तो यह उनके द्वारा "अन्यायपूर्ण संवर्धन" के बराबर होगा।

हमारी राय में, प्रस्तुतिकरण अच्छी तरह से स्थापित है और होने योग्य है

बरक़रार रखा। यदि अपीलार्थियों ने विलासिता कर के रूप में कोई राशि एकत्र की है

इस न्यायालय से अंतरिम आदेश प्राप्त करने के बाद उपभोक्ता/ग्राहक संबंधित राज्य सरकारों को उक्त राशि का भुगतान करेंगे।

प्रविष्टि 62 सूची 2 के दायरे पर हमारी राय को देखते हुए, हम नहीं सोचते हैं

इन अपीलों में उठाए गए अन्य मुद्दों का जवाब देना आवश्यक है जो बचे हुए हैं

खोलें।

तदनुसार, 1994 का डब्ल्यू. पी. सं. 567; डब्ल्यू. पी. सं. 568-569 1994 के हैं

अनुमति दी गई। सी. ए. सं. 123-125 1995 को अलग-अलग कारणों से खारिज कर दिया गया है। 1999 का सी. ए. सं. 2123, सी. ए. सं. 2124-25 1999 का सी. ए. सं. 2126,1999 का सी. ए. सं. 2127 और सी. ए. सं. 2552-2553 1999 का, 1996 का C.A.No.7870,1996 का सी. ए. सं. 6891 और 2000 का सी. ए. सं. 6365 अनुमत हैं।

लागत के बारे में कोई आदेश नहीं होगा।

डब्ल्यू. पी. सं. 567 और 568-69/94 की अनुमति है।

सी. ए. सं. 123-25 / 95 बर्खास्त कर दिया।

सी. ए. सं. 2124-25 / 99 , 2126/99 , 2127/99 , 2552-53 / 99 , 7870/96 .

6891/96 और सी. ए. सं. 6365/2000 की अनुमति है।